इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BSKC-131
संस्कृत पद्य-साहित्य

संस्कृत पद्य-साहित्य

खंड 3 शिशुपालवधम्	3
खंड 4 नीतिशतकम्	63

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री
राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

प्रो. रमाकान्त पाण्डेय
निदेशक, मुक्त स्वाध्याय पीठ
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,
नई दिल्ली

प्रो. आनन्द कुमार श्रीवास्तव
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कला संकाय
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. देवेश कुमार मिश्र
सहायक प्रोफेसर, मानविकी विद्यापीठ
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी

प्रो. सत्यकाम
निदेशक, मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक	इकाई संख्या	पाठ्यक्रम संयोजक
डॉ. रानी दाधीच सहायक प्रोफेसर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	खंड 3 (इकाई 8)	प्रो. सत्यकाम सुश्री अर्पिता त्रिपाठी (परामर्शदाता संस्कृत)
डॉ. एम. किषन सहायक प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	खंड 3 (इकाई 9)	
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय निदेशक, मुक्त स्वाध्याय पीठ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	खंड 3 (इकाई 10,11)	
डॉ. श्रुति राय सहायक प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	खंड 4 (इकाई 12)	
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय निदेशक, मुक्त स्वाध्याय पीठ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	खंड 4 (इकाई 13,14)	

सचिवालयीय सहयोग

अनिल कुमार
(कनिष्ठ सहायक एवं टंकक)
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

आवरण

सुश्री अरविन्दर चावला
ए.डी.ए. ग्राफिक्स, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री के. एन. मोहनन सहायक कुलसचिव (प्रकाशन) सा.नि.वि.प्र., इग्नू, नई दिल्ली	श्री सी. एन. पाण्डेय अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन) मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली	श्री बाबूलाल रेवाड़िया अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन) सा.नि.वि.प्र., इग्नू, नई दिल्ली

जुलाई, 2019
©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019
ISBN-978-93-89200-29-4
सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (चक्र मुद्रण) द्वारा या अन्यथा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के बारे में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी नई, दिल्ली – 110068 स्थित कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से कुल सचिव एम.पी.डी.डी इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली
मुद्रक : मैसर्स डी० के० प्रिंटर्स, 5/37 ए, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली – 110015 द्वारा मुद्रित।

खंड

3

शिशुपालवधम्

इकाई 8
शिशुपालवधम् महाकाव्य का परिचय 5

इकाई 9
द्वितीय सर्ग और माघ की प्रशस्तियाँ 22

इकाई 10
शिशुपालवधम् (द्वितीय सर्ग) श्लोक 26-37 34

इकाई 11
शिशुपालवधम् (द्वितीय सर्ग) श्लोक 42-56 47

खंड 3 का परिचय

'संस्कृत पद्य-साहित्य' पाठ्यक्रम का यह तृतीय खंड है। इस खंड में चार इकाइयाँ हैं। इस खंड की सभी इकाइयाँ महाकवि माघ कृत 'शिशुपालवधम्' महाकाव्य से सम्बन्धित हैं। महाकवि माघ संस्कृत साहित्य जगत् के सर्वश्रेष्ठ रत्न हैं। उनके द्वारा रचित 'शिशुपालवधम' बृहत्त्रयी का एक प्रमुख महाकाव्य है। इस खंड में आप महाकवि माघ का जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का परिचय प्राप्त करने के साथ ही शिशुपालवध महाकाव्य का कथासार तथा उसके प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं से भी परिचित होंगे।

शिशुपालवध महाकाव्य में 20 सर्ग हैं जिसका कथानक वेदव्यास प्रणीत महाभारत के सभापर्व से लिया गया है। इस महाकाव्य में शिशुपाल के वध की महाभारत से ली गयी कथा का लालित्यपूर्ण वर्णन कर माघ कवि ने संस्कृत साहित्य जगत् में अपूर्व ख्याति अर्जित की है। महाकवि माघ के विषय में 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' 'तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः', 'मेघे माघे गतं वयः' जैसी अनेक प्रशस्तियाँ प्रसिद्ध हैं जिनका अध्ययन आप इस खंड में करेंगे। साथ ही शिशुपालवध महाकाव्य के द्वितीय सर्ग के श्लोक सं0 26-56 तक का अन्वय, अनुवाद और व्याख्या भी आपके अध्ययनार्थ प्रस्तुत की जा रही है।

इस खंड की प्रत्येक इकाई में इकाई से सम्बन्धित कठिन शब्दावली दी गयी है जिनका अर्थ जानना आपके लिये नितान्त अपेक्षित है, इन शब्दों का अर्थ जानकर आप अपने भाषिक सामर्थ्य में वृद्धि कर सकते हैं। इकाइयों के अन्त में उपयोगी पुस्तकों की सूची दी गयी है। आप इन पुस्तकों का अध्ययन कर सम्बन्धित विषय की और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

शुभकामनाओं के साथ

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 8 शिशुपालवधम् महाकाव्य का परिचय

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 महाकवि माघ का परिचय

8.2.1 पारिवारिक पृष्ठभूमि

8.2.2 माघ का रचनाकाल

8.2.3 माघ का जन्मस्थल

8.2.4 माघ का कर्तृत्व

8.3 शिशुपालवध महाकाव्य का परिचय

8.3.1 शिशुपालवध महाकाव्य का उपजीव्य

8.3.2 शिशुपालवध महाकाव्य के नामकरण की सार्थकता

8.3.3 शिशुपालवध महाकाव्य का सर्ग के अनुसार कथासार

8.3.4 शिशुपालवध महाकाव्य की प्रमुख सूक्तियाँ

8.4 शिशुपालवध महाकाव्य के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

8.4.1 भगवान् श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण

8.4.2 देवर्षि नारद का चरित्र-चित्रण

8.4.3 शिशुपाल का चरित्र-चित्रण

8.4.4 धर्मराज युधिष्ठिर का चरित्र-चित्रण

8.5 सारांश

8.6 शब्दावली

8.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- महाकवि माघ के विषय में सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- शिशुपालवध महाकाव्य के विषय में जान सकेंगे।
- शिशुपालवध महाकाव्य के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को जान सकेंगे।
- श्रीकृष्ण के आदर्श चरित्र को जान सकेंगे।
- शिशुपालवध महाकाव्य की सूक्तियों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्कृत की पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों! संस्कृत वाङ्मय में साहित्य रचना की अनेक विधायें हैं जिनमें महाकाव्य, खंडकाव्य, गद्यकाव्य, गीतिकाव्य, शतककाव्य, मुक्तककाव्य आदि प्रमुख हैं। इनमें महाकाव्य प्रमुख है। प्रत्येक विधा कुछ नियमों में बंधी होती है। उसी प्रकार महाकाव्य की रचना भी कुछ दायरों में रहकर ही की जाती है। महाकाव्य सर्गबन्ध होता है। उसमें कोई न कोई एक नायक होता है। वह नायक उत्तम वंश का, कोई राजा, देवपुरुष होता है। शृंगार, वीर अथवा शान्त इन तीनों में से कोई एक रस प्रधान होता है। धर्मार्थकाममोक्ष इन चतुर्विध पुरुषार्थों में से कोई एक पुरुषार्थ की प्राप्ति करवाने वाला होता है। ग्रन्थारम्भ में मंगलाचरण, न्यूनातिन्यून आठ सर्ग, सर्ग का नामकरण जैसे अनेक नियमों में बद्ध महाकाव्य होता है। महाकवि कालिदास, भारवि, माघ प्रभृति महाकवियों के महाकाव्य आदर्शभूत हैं। इस इकाई में हम महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवध महाकाव्य के विषय में पढेंगे।

8.2 महाकवि माघ का परिचय

8.2.1 पारिवारिक पृष्ठभूमि

माघ के पिता का नाम दत्तक था। माघ के पिता अत्यन्त प्रतिष्ठित, उदारमना तथा अत्यन्त दयालु थे। सभी दीन दुखियों को आश्रय देते थे इसी कारण लोग उन्हें सर्वाश्रय नाम से भी बुलाते थे। राजा श्री वर्मलात् के धर्मसचिव श्री सुप्रभदेव माघ के पितामह थे। माघरचित कविवंश वर्णन से यह जानकारी प्राप्त होने के कारण यह अत्यन्त प्रामाणिक है।

8.2.2 माघ का रचनाकाल

अन्यान्य पण्डितों ने माघ, उनके पिता तथा उनकी पत्नी के विषय में अपनी रचनाओं में वर्णन किया है। जैन कवि मेरुतुंगाचार्य ने अपनी रचना 'प्रबन्धचिन्तामणि' में महाकवि माघ के पिता के वैभव का वर्णन करते हुए माघ तथा उनकी पत्नी का चरित्र-चित्रण अत्यन्त विस्तार के साथ किया है। वल्लालपण्डित ने अपने भोजप्रबन्ध में महाकवि माघ तथा उनकी पत्नी की दानशीलता का विस्तृत वर्णन किया है। प्रभाचन्द्र रचित 'प्रभावकचरित' में भी माघ, उनके पिता तथा पत्नी का वर्णन प्राप्त है। प्रबन्धचिन्तामणि का रचनाकाल 1461 तथा प्रभावकचरित का रचनाकाल 1334 है। अतः कुछ विद्वान् इस प्रमाण के आधार पर माघ का काल ग्यारहवीं शताब्दी मानते हैं।

ध्वनिवादी आचार्य आनन्दवर्द्धन ने ध्वन्यालोक के द्वितीय उद्योत की 27वीं कारिका की वृत्ति में महाकवि माघ के शिशुपालवध के दो श्लोकों को उद्धृत किया है। आनन्दवर्द्धनाचार्य का काल नवीं शताब्दी माना गया है। अतः निश्चित रूप से माघ का काल नवीं शताब्दी से तो पूर्व का ही होगा। वामनाचार्य ने अपने काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति ग्रन्थ में भी शिशुपालवध को उद्धृत किया है। वामन का काल आठवीं शताब्दी का अन्त है। अतः माघ आठवीं शताब्दी से भी पूर्व के हैं।

प्राच्यविद्यावित् डॉ. कीलहार्न को राजपूताना के बसन्तगढ़ में एक शिलालेख प्राप्त हुआ जिस पर माघ के पितामह के आश्रयदाता राजा वर्मलात् का नाम खुदा है और वर्मलात् का समय छठीं सदी है। इस आधार पर उनके पौत्र का काल सातवीं सदी मानना ही सर्वाधिक प्रामाणिक है।

8.2.3 माघ का जन्मस्थल

माघ श्रीमाली ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। माघ का जन्म राजस्थान के भीनमाल नगर में हुआ था। कुछ विद्वान् माघ को मध्य प्रदेश का कहते हैं, कुछ गुजरात के नगर भीनमाल का कहते हैं, किन्तु राजस्थान में स्थित भीनमाल जो कि पहले गुजरात का अंश था, माघ वहीं के हैं। स्वयं माघ ने शिशुपालवध महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में अपना निवास स्थान भीनमाल को बताया है। यह पंक्ति पुरानी पाण्डुलिपियों से प्राप्त है।

''इति श्रीभीनमालवास्तव्य 'दत्तक' सूनोर्महावैयाकरणस्य 'माघस्य' कृतौ 'शिशुपालवधे' महाकाव्ये .....''

अतः यह सिद्ध है कि महाकवि माघ राजस्थान के भीनमाल नगर के ही निवासी थे।

8.2.4 माघ का कर्तृत्व

महाकवि माघ की प्रसिद्धि उनकी एकमात्र विलक्षण कृति शिशुपालवधम् के आधार पर ही है। उनकी एक ही कृति प्राप्त है और उसे संस्कृत साहित्य जगत् की बृहत्त्रयी में स्थान प्राप्त है, यह उनकी श्रेष्ठता का प्रमाण है। तथापि क्षेमेन्द्र की औचित्यविचारचर्चा, वल्लभदेव की सुभाषितावली, सदुक्तिकर्णामृत तथा सुभाषितरत्नभाण्डागार में भी माघ के नाम से श्लोक उद्धृत हैं किन्तु ये श्लोक शिशुपालवध के नहीं हैं, इससे यह तो स्पष्ट है कि माघ की या तो अन्यान्य रचनाऐं रही होंगी जो अप्राप्य हैं अथवा उन्होंने प्रक्षिप्त श्लोकों की भी रचना की होगी। ये श्लोक कहाँ से लिये गए हैं ये तो ज्ञात नहीं किन्तु माघ का कौशल प्रमाणित करने के लिये शिशुपालवध ही पर्याप्त है। अन्य प्राप्त श्लोक अधोलिखित हैं –

बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते
पिपासितैः काव्यरसो न पीयते।
न विद्यया केनचिदुद्धृतं कुलं
हिरण्यमेवार्जय निष्फलाः कलाः।।

(औचित्यविचारचर्चा)

नारीनितम्बफलके प्रतिबध्यमाना
हंसीव हेमरशना मधुरं ररास।
तन्मोचनार्थमिव नूपुरराजहंसा
चक्रन्दुरार्तमुखरं चरणावलग्नाः।।

(सुभाषितावली)

स जयति गिरिकन्या मिश्रिताश्चर्यमूर्ति -
स्त्रिपुरयुवतिलीलानिर्ममभ्रंशहेतुः।
उपचयवति यस्य प्रोन्नतैकस्त नत्वा-
दुपरि भुजगहारस्थानवैषम्यमेति।।

(सदुक्तिकर्णामृत)

अर्थाः न सन्ति न च मुञ्चन्ति माम दुराशा
त्यागान्न संकुचति दुर्ललितं मनो मे।
याञ्चा च लाघवकरी स्ववधे च पापं
प्राणः स्वयं व्रजत किं नु विलम्बितेन।।

(सुभाषितरत्नभाण्डागार)

8.3 शिशुपालवध महाकाव्य का परिचय

महाकवि माघ विरचित शिशुपालवध महाकाव्य संस्कृत साहित्य की अनुपम कृति है। माघ संस्कृत जगत् में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। शिशुपालवध महाकाव्य बीस सर्गों में विभक्त है तथा इसमें कुल 1680 श्लोक हैं।

8.3.1 शिशुपालवध महाकाव्य का उपजीव्य

माघ रचित शिशुपालवध का उपजीव्य महाभारत का सभापर्व है। सभापर्व के अध्याय 33 से लेकर 45 तक शिशुपालवध की कथा ही वर्णित है।

श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध में भी यही विषय वर्णित है। इसके अतिरिक्त पद्मपुराण, विष्णुपुराण, अग्निपुराण आदि पुराणों में भी शिशुपाल के दुराचारों तथा कृष्ण द्वारा उसके वध की कथा मिलती है। तथापि कथा विस्तार की दृष्टि से शिशुपालवध महाभारत से ही प्रेरित होकर लिखा गया महाकाव्य है।

8.3.2 शिशुपालवध महाकाव्य के नामकरण की सार्थकता

शिशुपालवध महाकाव्य के नायक श्रीकृष्ण हैं। शिशुपाल इस महाकाव्य का प्रतिनायक है। महाकाव्य में वर्णित विभिन्न सर्गों की कथा के अनुसार शिशुपाल एक पराक्रमी, अप्रतिम वीर, अजेय, स्वाभिमानी, उद्धत तथा आततायी व्यक्ति है। भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा उसकी उद्दण्डताओं तथा लोक उत्पीड़न से क्षुब्ध होकर उसका वध किया जाता है। अतः श्रीकृष्ण के द्वारा अनाचारी शिशुपाल के वध की कथा का वर्णन होने के कारण विषयवस्तु परक नाम 'शिशुपालवधम्' युक्तिसंगत है।

8.3.3 शिशुपालवध महाकाव्य का सर्ग के अनुसार कथासार

प्रथम सर्ग

जिस समय श्रीकृष्ण भगवान् द्वारिकापुरी में शासन कर रहे थे उस समय एकबार देवर्षि नारद आकाश मार्ग से उनके यहाँ आए। नारद जी को आया देखकर भगवान् श्रीकृष्ण ने उनका यथोचित आदर-सत्कार किया और उनके आने का कारण पूछा। नारद जी ने कहा कि मेरे आने का प्रथम कारण तो यह है कि मुझे आपके दर्शन की अभिलाषा थी और अवान्तर कारण यह है कि देवराज इन्द्र ने मेरे द्वारा सन्देश भिजवाया है कि आपके द्वारा शिशुपाल का वध किया जाए। ये शिशुपाल वही है जो पूर्व-पूर्व जन्मों में हिरण्यकशिपु और रावण था दोनों ही जन्म में इसने देवताओं को प्रताड़ित किया था और मनुष्यलोक में भी आतंक फैलाया था। देवर्षि नारद ने श्रीकृष्ण को याद दिलाया कि उन-उन जन्मों में आपने ही नरसिंह अवतार लेकर तथा दशरथनन्दन राम के रूप में धरती पर अवतरित होकर लोक का कल्याण किया था। वही दुष्टात्मा पुनः शिशुपाल के रूप में धरती पर अनाचार फैला रहा है। आपके द्वारा उसका भी संहार सर्वजनहिताय श्रेयस्कर होगा।

नारद जी के इस प्रकार के वचन सुनकर प्रभु श्रीकृष्ण ने अपनी भ्रकुटि चढा ली और शिशुपाल पर क्रोधित हो गए। उनके इस क्रोध को वध की स्वीकृति मानकर देवर्षि पुनः अपने लोक को चले गए।

द्वितीय सर्ग

देवर्षि नारद के द्वारा इन्द्र का सन्देश सुनकर श्रीकृष्ण दुविधा में पड़ गये कि युधिष्ठिर के निमन्त्रण पर हस्तिनापुर जायें अथवा पहले शिशुपाल का वध करने जायें। इस विषय में उन्होंने उद्धव जी और अग्रज बलराम जी से मन्त्रणा की तो बलराम जी ने कहा कि नीति का निर्णय है कि अपनी उन्नति और शत्रु का विनाश करना चाहिए। शत्रु और मित्र तीन प्रकार के बताये गए हैं– कृत्रिम, सहज और प्राकृतिक, उपकारी शत्रु के साथ सन्धि कर लेना उचित है, किन्तु अपकारी मित्र के साथ सन्धि नहीं करनी चाहिए। बलराम जी ने शिशुपाल पर आक्रमण करने का सुझाव दिया।

उद्धव जी ने श्रीकृष्ण से कहा कि मेरे मन्तव्य से आपको आगे बढ़कर शिशुपाल का वध नहीं करना चाहिए, आपको इस समय समस्त राजाओं के मन में शिशुपाल के कुकर्मों का विष फैलाना चाहिए। अपने गुप्तचरों से उसके लिए फूट डलवाओ। राजाओं को युद्ध के लिए तैयार होकर युधिष्ठिर के यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए कहो। श्रीकृष्ण याद रखिये सात्वती को आपने शिशुपाल के द्वारा 100 गुनाह करने पर भी माफ करने का वचन दिया था यदि वह 101 बार आपका अपमान करेगा तभी आप उसका वध नीतिपूर्वक कर सकेंगे। तभी आपके वचन का गौरव भी रहेगा। आप युधिष्ठिर के यहां जाइये, यज्ञ में सम्मिलित होइये, जैसे ही आपको वहां सम्मान एवं आतिथ्य मिलेगा क्रोधाग्नि में दहकता हुआ शिशुपाल आप पर आक्रमण करने अवश्य आयेगा, आपको अपशब्द कहेगा। फिर 100 अपमानजनक शब्द पूरे होते ही आप उसका संहार कर दीजियेगा। श्रीकृष्ण को यह सुझाव युक्तिसंगत लगा और वे कार्यान्तर में व्यस्त हो गए।

तृतीय सर्ग

तृतीय सर्ग में प्रभु श्रीकृष्ण के द्वारा यज्ञ में भाग लेने के लिए किये गए प्रस्थान का वर्णन है। इस सर्ग में द्वारकापुरी की अट्टालिकायें, रत्नपूरित आपण ,परकोटे व बाजार का सौन्दर्य वर्णित है।

चतुर्थ सर्ग

चतुर्थ सर्ग में रैवतक पर्वत का बहुत ही मनोहारी वर्णन महाकवि माघ ने प्रस्तुत किया है। इस सर्ग में कवि ने प्रकृति का मानवीकरण किया है। भोगभूमि होते हुए भी माघ ने रैवतक पर्वत को सिंह भूमि तथा मोक्ष भूमि सिद्ध किया है।

पंचम सर्ग

इस सर्ग में रैवतक पर्वत पर भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी सेना सहित पड़ाव डालने के लिए प्रवेश किया। पर्वत पर जाते समय सेना की शोभा का बड़ा रमणीय वर्णन कवि ने किया है।

षष्ठ सर्ग

भगवान् श्रीकृष्ण ने जैसे ही रैवतक पर्वत पर कदम रखा छहों ऋतुऐं एकसाथ भगवान् की सेवा करने के लिए उपस्थित हो गईं। इस प्रकार विभिन्न ऋतुओं का आगमन प्रभु श्रीकृष्ण के आते ही रैवतक पर्वत पर जैसे-जैसे उनके कदम पड़ते गए वैसे-वैसे दृष्टिगोचर हुआ।

सप्तम सर्ग

जब छहों ऋतुऐं एकसाथ रैवतक पर्वत पर प्रादुर्भूत हो गयीं तो श्रीकृष्ण और यादवगण अपनी-अपनी रमणियों सहित उपवन में विहार के लिए निकल पड़े। रमणियों के कामजनित विलासों का अत्यन्त सुन्दर वर्णन सप्तम सर्ग में महाकवि माघ ने किया है।

अष्टम सर्ग एवं नवम सर्ग

उक्त दोनों सर्गों में यादवों की रमणियों के वन विहार से थककर जलक्रीडा करने एवं सुरत क्रीडा में रत सभी रमणियों का मद्यपान में बेसुध होना वर्णित है।

दशम सर्ग

दशम सर्ग में मद्यपान का वर्णन है। पूर्णतया सम्भोग शृंगार का वर्णन करते हुए महाकवि माघ ने बाह्य रति और आभ्यन्तर रति का सरस वर्णन किया है।

एकादश सर्ग

इस सर्ग में प्रभात से सायंकालपर्यन्त प्रकृति का मनोरम दृश्य चित्रित किया है।

द्वादश सर्ग

इस सर्ग में माघ ने सम्पूर्ण सेना को विभिन्न नदियों व ग्राम पार करते हुए यमुना नदी के तट पर पहुँचकर यमुना को पार करके हस्तिनापुर की ओर प्रस्थान करवाया।

त्रयोदश सर्ग

राजा युधिष्ठिर को जैसे ही श्रीकृष्ण की सेना के यमुना पार कर लेने का सन्देश प्राप्त हुआ वैसे ही उन्होंने अपने चारों अनुजों के साथ यमुना तट की ओर अगुवाई के लिये प्रस्थान किया। फिर युधिष्ठिर के सभा स्थल पहुँचकर श्रीकृष्ण व युधिष्ठिर स्वर्णसिंहासन पर बैठे।

चतुर्दश सर्ग

प्रस्तुत सर्ग में श्रीकृष्ण की आज्ञा से युधिष्ठिर यज्ञ क्रिया हेतु प्रवृत्त होते हैं। भीष्मपितामह की आज्ञा से युधिष्ठिर ने प्रथम अर्घ्य श्रीकृष्ण को देकर यज्ञकर्म सम्पन्न किया।

पंचदश सर्ग

धर्मराज युधिष्ठिर के द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण की अग्रपूजा देखकर मिथ्याभिमानी शिशुपाल कठोर वचन कहने लगा। शिशुपाल वहाँ श्रीकृष्ण को मारने की धमकी देकर अपने शिविर में चला जाता है ।

षोडश सर्ग

प्रस्तुत सर्ग में युद्ध का निश्चय करके शिशुपाल के द्वारा भेजे गये दूत द्वारा कहे गये कठोर वचनों के प्रत्युत्तर में श्रीकृष्ण ने दूत को कहा कि जिस मनःस्थिति से और जिस सज्जनता से शिशुपाल यहाँ सभा में आएगा उसी प्रकार से उसके साथ व्यवहार किया जाएगा।

सप्तदश सर्ग

प्रस्तुत सर्ग में अलौकिक पुरुष श्रीकृष्ण सामने से आती हुई शत्रुसेना को देखने मात्र से जान गए थे कि उनकी संख्या कितनी है और श्रीकृष्ण की सेना चारों ओर से शत्रुसेना की तरफ बढ़ने लगी। सेना के कुशल संचालन का वर्णन इस सर्ग का वैशिष्ट्य है।

अष्टादश सर्ग एवं एकोनविंश सर्ग

प्रस्तुत दोनों सर्गों में श्रीकृष्ण एवं शिशुपाल की सेनाओं के मध्य युद्ध का अत्यन्त वीभत्स एवं सचित्र चित्रण किया गया है।

विंश सर्ग

इस सर्ग में शिशुपाल के कटु वचनों को सुनकर श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसकी गर्दन को काट डाला। इस प्रकार बीस सर्ग वाला शिशुपालवध महाकाव्य यहीं समाप्त होता है।

8.3.4 शिशुपालवध महाकाव्य की प्रमुख सूक्तियाँ

महाकवि माघ ने शिशुपालवध महाकाव्य में जिन सूक्तियों का प्रयोग किया है उनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं–

ग्रहीतुमार्यान् परिचर्यया मुहुर्महानुभावा हि नितान्तमर्थिनः। 1/17

अथवा श्रेयसि केन तृप्यते ? 1/29

सदाभिमानैकधना हि मानिनः। 1/67

महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः। 2/13

विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा । 2/34

ध्रियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत् कुतः सुखम् । 2/35

बद्धमूलस्य मूलं हि महद्वैरतरोः स्त्रियः। 2/38

गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः। 1/14

सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि। 1/72

शुभेतराचारविपक्त्रिमापदो विपादनीया हि सतामसाधवः। 1/73

सर्वः स्वार्थं समीहते। 2/65

समय एव करोति बलाबलम्। 6/44

दाक्ष्यं हि सद्यः फलदम्। 12/32

बोध प्रश्न 1

1. निम्नलिखित प्रश्नों में सत्य (√) तथा असत्य (×) कथन का चयन कीजिये।

(i) प्रबन्धचिन्तामणि के लेखक मेरुतुगांचार्य हैं– ( )

(ii) औचित्यविचारचर्चा क्षेमेन्द्र की कृति है – ( )

(iii) शिशुपालवध महाकाव्य में बीस सर्ग हैं – ( )

(iv) शिशुपालवध महाकाव्य का उपजीव्य महाभारत का वनपर्व है –( )

(v) शत्रु और मित्र तीन प्रकार के बताये गये हैं – ( )

(vi) रैवतक पर्वत का वर्णन पंचम सर्ग में है – ( )

(vii) 'श्रेयसि केन तृप्यते' रघुवंश महाकाव्य का सूक्ति वाक्य है – ( )

2. महाकवि माघ के पिता का नाम क्या था ?

.....

.....

3. महाकवि माघ का जन्म कहाँ हुआ था ?

.....

.....

4. शिशुपालवध के मंगलाचरण का प्रथमपद क्या है ?

.....

.....

5. शिशुपाल पूर्वजन्म में क्या था ?

.....

.....

अभ्यास प्रश्न 1

1. महाकवि माघ के कर्तृत्व के विषय में पाँच पंक्तियाँ लिखिये।

2. शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग की कथा लिखिये।

8.4 शिशुपालवध महाकाव्य के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

महाकवि माघ विरचित शिशुपालवध के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण निम्नानुसार है –

8.4.1 भगवान् श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण

भगवान् श्रीकृष्ण शिशुपालवध के नायक हैं। शिशुपालवध के आरम्भ से अन्त तक भगवान् श्रीकृष्ण अपने उत्तम चरित्र तथा अनुकरणीय गुणों के कारण नायक के रूप में आदर्श प्रस्तुत करते हैं। एक नायक के लिये लोकोपयोगी कार्य करने के कारण वे सदैव सभी की प्रशंसा के पात्र रहते हैं। श्रीकृष्ण धीरोदात्त नायक हैं।

दशावताररूप श्रीकृष्ण – माघ ने शिशुपालवध के आरम्भ में ही श्रीकृष्ण को जगत् के आधारभूत लक्ष्मीपति के रूप में प्रणाम करके भगवान् विष्णु के अवतार के रूप में प्रस्तुत किया है।

श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत् जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि।
वसन्ददर्शावतरन्तमम्बरात् हिरण्यगर्भाङ्गभुवं मुनिं हरिः।।

(शिशुपालवध– 1/1)

प्रथम सर्ग के तैंतीसवें श्लोक में माघ ने श्रीकृष्ण को आदिपुरुष के रूप में प्रस्तुत किया है–

उदासितारं निगृहीतमानसैर्गृहीतमध्यात्मदृशा कथंचन।
बहिर्विकारं प्रकृतेः पृथग्विदुः पुरातनं त्वां पुरुषं पुराविदः।।

(शिशुपालवध– 1/33)

चौंतीसवें श्लोक में वराहावतार का उल्लेख है –

निवेशयामासिथ हेलयोद्धृतं फणाभृतां छादनमेकमोकसः।
जगत्त्रयैकस्थपतिस्त्वमुच्चकैरहीश्वरस्तम्भशिरःसु भूतलम्।।

(शिशुपालवध– 1/34)

अर्थात् तीनों लोकों के प्रधान शिल्पी आपने ही वराहावतार में अत्यन्त सहजता से धारण किये गए पाताल के मुख्य आवरण पृथ्वी को नागराज के खम्भों के जैसे ऊँचे शिरों पर स्थापित किया। इसके अतिरिक्त अन्य अवतारों का वर्णन चतुर्दश सर्ग में प्राप्त है।

विनयशीलता – भगवान् श्रीकृष्ण में विनयशीलता कूट-कूट कर भरी है। देवर्षि नारद जब आकाशमार्ग से इन्द्र का सन्देश लेकर धरती की ओर आते हैं तो श्रीकृष्ण अतिथिदेवोभव का अनुपालन करते हुए उनका पादप्रक्षालन करते हैं, अर्घ्यादि से पूजा तथा आचमन करते हैं।

तमर्घ्यमर्घ्यादिकयादिपूरुषः सपर्यया साधु स पर्यपूपुजत्।
गृहानुपैतुं प्रणयादभीप्सवो भवन्ति नापुण्यकृतां मनीषिणः।।

(शिशुपालवध– 1/14)

भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं उठकर अपना आसन भी नारद जी को देते हैं तथा अतिथि के संकेत करने पर ही स्वयं बैठते हैं।

शान्त व गम्भीर आचरण – श्रीकृष्ण को शिशुपालवध में शान्त व गम्भीर प्रकृति वाला दिखाया गया है। महाराज युधिष्ठिर के द्वारा राजसूय यज्ञ में बुलाए जाने पर तथा शिशुपाल के दुराचारों हेतु देवराज इन्द्र के बुलवाने पर श्रीकृष्ण संशय में आ गए कि पहले कहाँ जायें तब श्रीकृष्ण ने पितृव्य उद्धव जी तथा अग्रज बलराम जी से परामर्श मांगा। दोनों के अलग-अलग मन्तव्य को धैर्यपूर्वक सुना तथा गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करके सही पथ का चयन किया।

यावदर्थपदां वाचमेवमादाय माधवः।
विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।।

(शिशुपालवध– 2/13)

अद्भुत सौन्दर्य – तृतीय सर्ग में श्रीकृष्ण के अप्रतिम सौन्दर्य का वर्णन प्राप्त होता है। जब श्रीकृष्ण द्वारिकापुरी से हस्तिनापुर जाने के लिये उद्यत होते हैं तब उनका सौन्दर्य अद्भुत होता है।

मृणालसूत्रामलमन्तरेण
स्थितश्चलच्चामरयोर्द्वयं सः।
भजेऽभितः पातुकसिद्धसिन्धो -
रभूतपूर्वारुचमम्बुराशेः।।

(शिशुपालवध– 3/3)

अर्थात् जब श्याम वर्ण वाले भगवान् श्रीकृष्ण के दोनों ओर चँवर ढुलाए जा रहे थे तब उनकी शोभा सागर में दोनों तरफ से गिरती हुई आकाशगंगा के समान सुशोभित हो रही थी।

प्रकृति प्रेम – जब भगवान् श्रीकृष्ण युधिष्ठिर के यज्ञ में सम्मिलित होने के लिये द्वारिकापुरी से हस्तिनापुर जाते हैं तो मार्ग में सारथि दारुक श्रीकृष्ण को रैवतक पर्वत की मनोहारी प्राकृतिक छटा के बारे में बताता है। उस सरस प्राकृतिक वर्णन को सुनने के बाद श्रीकृष्ण के मन में प्रकृति के उस सुरम्य स्थल को देखने की उत्कण्ठा जाग्रत हो गई।

दृष्टोऽपि शैलः स मुहुर्मुरारे-
रपूर्ववद्विस्मयमाततान्।
क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति
तदेव रूपं रमणीयतायाः।।

(शिशुपालवध– 4/17)

अर्थात् बार-बार देखे जाने पर भी उस रैवतक पर्वत ने अपूर्व के समान होकर श्रीकृष्ण के आश्चर्य को बढ़ा दिया, जो प्रतिक्षण नवीनता को प्राप्त करता है, वही सौन्दर्य का लक्षण है।

सर्वशक्तिमान् सर्वसम्पन्नस्वरूप – महाकवि माघ ने शिशुपालवध के नायक श्रीकृष्ण को तेजस्वी, सर्वशक्तिमान् और सर्वसम्पन्न कहा है। नारद जी ने इन्द्र का सन्देश देते हुए कहा है कि प्रभु आपका अवतार मात्र कंस का वध करने के लिये ही नहीं हुआ है अपितु लोक को प्रताड़ित करने वाले शिशुपाल का वध भी आपके हाथों होना निर्धारित है। जिस प्रकार घने अन्धकार को सूर्य ही नष्ट कर सकता है उसी प्रकार कंस व शिशुपाल जैसे दुष्टों से पीडित इस संसार की रक्षा के लिये श्रीकृष्ण को ही समर्थ माना है।

उपप्लुतं पातुमदो मदोद्धतैस्त्वमेव विश्वम्भर! विश्वमीशिषे।
ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः।।

(शिशुपालवध– 1/38)

8.4.2 देवर्षि नारद का चरित्र-चित्रण

महाकवि माघ प्रणीत शिशुपालवध महाकाव्य में देवर्षि नारद को एक उत्कृष्ट पात्र कहा गया है। प्रथम सर्ग में नारद की भूमिका प्रस्तावना के रूप में प्राप्त है। लोकहित में प्रवृत्त देवर्षि नारद सर्वगामी हैं, सदैव वीणा बजाते हैं, ब्रह्माजी के मानस पुत्र हैं, उनका आदर्श व्यक्तित्व माघ ने प्रस्तुत किया है।

परम तेजस्वी—नारद जी तेजस्वी प्रतिभा के धनी हैं। आकाश से पृथ्वी पर उतरते हुए नारद जी को देखकर द्वारिकावासियों के मन में संशय था कि यह परम तेजस्वी कौन है? इस प्रकार का तेजस्वी स्वरूप शिशुपालवध में नारद जी का प्रस्तुत है।

गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः प्रसिद्धमूर्ध्वज्वलनं हविर्भुजः।
पतत्यधो धाम विसारि सर्वतः किमेतदित्याकुलमीक्षितं जनैः।।

(शिशुपालवधम्— 1/2)

चयस्त्विषामित्यवधारितं पुरा ततः शरीरीति विभावितकृतिम्।
विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः।।

(शिशुपालवधम्— 1/3)

पराक्रमी एवं शूरवीर— जब देवर्षि नारद ने पृथ्वी पर अपना पैर रखा तो पृथ्वी का बोझ इतना अधिक बढ़ गया था कि शेषनाग के फण अत्यन्त श्रम से उठाये जाने पर भी पाताल की ओर झुके जा रहे थे और पृथ्वी का भार धारण करना शेषनाग के लिए दुष्कर हो रहा था अतः उनका शौर्य और पराक्रम इस श्लोक से प्रमाणित है।

अथ प्रयत्नोन्नमितानमत्फणैर्धृते कथंचित्फणिनां गणैरधः।
न्यधायिषातामभिदेवकीसुतं सुतेन धातुश्चरणौ भुवस्तले।।

(शिशुपालवधम्— 1/13)

मनोहारी रूप — नारद जी के आगमन से पूर्व ही उनके तेजोराशि से पृथ्वीवासियों की आँखें चौंधिया रहीं थीं किन्तु जैसे ही वे नीचे आये अपनी वेशभूषा के कारण व विविध क्रियाओं के कारण वे एक सिद्ध तपस्वी ऋषि की भाँति सुशोभित हो रहे थे।

पिशङ्गमौंजीयुजमर्जुनच्छविं वसानमेणाजिनमञ्जनद्युति।
सुवर्णसूत्राकलिताधराम्बरां विडम्बयन्तं शितिवाससस्तनुम्।।

(शिशुपालवधम्— 1/6)

प्रखर मनीषी नारद जी — देवर्षि नारद मोह तथा अन्धकार से अत्यन्त दूर थे। ज्ञानपुंज स्वरूप थे। एक सुधी और प्रखर मनीषी के रूप में प्रथम सर्ग में आपका सौम्य वर्णन प्राप्त है। नारद जी स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण को सम्बोधित करके दार्शनिक ज्ञान के गूढ़ रहस्य को स्पष्ट करते हैं। सांसारिक विषय वासनाओं से मुक्ति का उपदेश देते हुए मोक्ष प्राप्ति के लिए महापुरुष बनकर श्रीकृष्ण की शरण में आने को ही बल देते हैं।

उदीर्णरागप्रतिरोधकं जनैरभीक्ष्णमक्षुण्णतयातिदुर्गमम्।
उपेयुषो मोक्षपथं मनस्विनस्त्वमग्रभूमिर्निरपायसंश्रया।।

(शिशुपालवधम्— 1/32)

मृदुभाषी एवं विनम्र व्यक्तित्व — शिशुपालवध महाकाव्य में देवर्षि नारद यद्यपि एक ही सर्ग में आते हैं तथापि अपने मृदुभाषी एवं विनम्र व्यक्तित्व का परिचय देते हैं। जब श्रीकृष्ण ने अतिथि सत्कार करके उनकी स्तुति की एवं आगमन का कारण पूछा तो अत्यन्त विनम्रता से देवर्षि ने उत्तर दिया कि, आपके दर्शन के अतिरिक्त इस पृथ्वी पर आने का मेरा और क्या प्रयोजन हो सकता है।

इति ब्रुवन्तं तमुवाच स व्रती न वाच्यमित्थं पुरुषोत्तम त्वया।
त्वमेव साक्षात्करणीय इत्यतः किमस्ति कार्यं गुरु योगिनामपि।।

(शिशुपालवधम्– 1/31)

निजौजसोज्जासयितुं जगद्द्रुहामुपाजिहीथा न महीतलं यदि।
समाहितैरप्यनिरूपितस्ततः पदं दृशः स्याः कथमीश! मादृशाम्।।

(शिशुपालवधम्– 1/37)

तीनों लोकों में पूज्य नारद जी – स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने वचनों में कहा है कि हे नारद जी! आप तीनों लोकों में पूज्य हैं।

हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वांचरितैः कृतं शुभैः।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।।

(शिशुपालवधम्– 1/26)

विलोकनेनैव तवामुना मुने! कृतः कृतार्थोऽस्मि निबर्हितांहसा।
तथापि शुश्रूषुरहं गरीयसीर्गिरोऽथवा श्रेयसि केन तृप्यते।।

(शिशुपालवधम्– 1/29)

सन्देशवाहक नारद जी – इस महाकाव्य में देवर्षि नारद को एक महान् यशस्वी, मनस्वी और एक सन्देशवाहक के रूप में महाकवि माघ ने प्रस्तुत किया है। देवराज इन्द्र के आदेशानुसार देवताओं एवं मानवों के लोककल्याण के लिए शिशुपाल का वध करने के लिए देवर्षि नारद एक सन्देशवाहक बन के पृथ्वी पर श्रीकृष्ण के पास द्वारिकापुरी में आये हैं।

हृदयमरिवधोदयादुदूढद्रढिम दधातु पुनः पुरन्दरस्य।
घनपुलकपुलोमजाकुचाग्रद्रुतपरिरम्भनिपीडनक्षमत्वम्।।

(शिशुपालवधम्– 1/74)

8.4.3 शिशुपाल का चरित्र-चित्रण

प्रतिनायक का व्यक्तित्व उपस्थापित करना भी काव्य में सन्देश देता है। प्रतिनायक यदि सम्पूर्ण काव्य में अधर्म का आचरण कर रहा है तो अन्त में प्रतिफल बुरा दिखाकर समाज में यह सन्देश दिया जाता है कि बुरे कर्मों का फल बुरा होता है, अतः सत्कर्म करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए। शिशुपालवध महाकाव्य का प्रमुख उद्देश्य बुराई का नाश करना तथा अच्छाई की समाज में गौरवमय स्थापना करना है। खलनायक शिशुपाल के नकारात्मक चरित्र से जन सामान्य को सत्कर्म की शिक्षा देना ही इस महाकाव्य का प्रधान फल है। अतः महाकवि माघ ने अपने महाकाव्य का नाम इस प्रतिनायक शिशुपाल के आधार पर ही रखा है। चेदि राज्य की राजधानी माहिष्मती का राजा शिशुपाल एक शक्तिसम्पन्न शौर्यवान् राजा है तथा अपने अहंकारी एवं क्रोधी स्वभाव के कारण सभी इनसे भयभीत रहते हैं। शिशुपालवध महाकाव्य के नायक श्रीकृष्ण की बुआ के पुत्र हैं ? इसलिए श्रीकृष्ण के भाई भी हैं।

सटाच्छटाभिन्नघनेन बिभ्रता नृसिंह! सैंहीमतनुं तनुं त्वया।
स मुग्धकान्तास्तनसङ्गभङ्गुरैरुरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः।।

(शिशुपालवधम्– 1/47)

राक्षस रूप शिशुपाल – शिशुपालवध के प्रथम सर्ग में ही स्वयं देवर्षि नारद शिशुपाल के पूर्व जन्म में राक्षस होने तथा इस जन्म में राक्षसों के अवतार होने की बात श्रीकृष्ण को बताते हैं। पूर्व पूर्व जन्म में यही शिशुपाल हिरण्यकशिपु नामक दैत्य था जिसे श्रीकृष्ण के

नृसिंह अवतार ने अपने नखों से भेद कर समाप्त किया था। उसके उपरान्त यही शिशुपाल रावण के रूप में पृथ्वी पर अधर्म फैलाने लगा और प्रभु के श्रीराम अवतार ने उस राक्षस का संहार किया और तृतीय जन्म में वही राक्षस शिशुपाल के रूप में प्रकट हुआ। वह पूर्व-पूर्व जन्मों से भी अधिक शक्तिसम्पन्न पराक्रमी व अधिक दुष्ट हुआ। पिछले जन्मों की भाँति इस जन्म में भी प्रभु द्वारा उसका वध करके सृष्टि में हो रहे अनाचार को समाप्त किया गया।

अथोपपत्तिं छलनापरोऽपरामवाप्य शैलूष इवैष भूमिकाम्।
तिरोहितात्मा शिशुपालसंज्ञया प्रतीयते सम्प्रति सोऽप्यसः परैः।।

(शिशुपालवधम्– 1/69)

ओजस्वी एवं साहसी शिशुपाल – शिशुपालवध महाकाव्य में शिशुपाल को एक ओजस्वी व्यक्तित्व वाला एवं साहसी पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शिशुपाल अपने शौर्य एवं पराक्रम से देवताओं, दैत्यों और भयानक राक्षसों को भी परास्त कर देता है। पूर्व जन्म में भी महासाहसी रावण के रूप में शिशुपाल ही था देवगण इसके शौर्य से इतने भयभीत हो चुके थे कि स्वयं देवराज इन्द्र शिशुपाल से भयभीत होकर अपनी पुरी अमरावती को त्यागकर हिमालय की कन्दराओं में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

अशक्नुवन् सोढुमधीरलोचनः सहस्त्ररश्मेरिव यस्य दर्शनम्।
प्रविश्य हेमाद्रिगुहागृहान्तरं निनाय बिभ्यद्दिवसानि कौशिकः।।

(शिशुपालवधम्– 1/53)

देवगण ही नहीं शिशुपाल अपने पराक्रम एवं विशिष्ट बल के कारण सम्पूर्ण विश्व को पीड़ित कर रहा था–

बलावलेपादधुनापि पूर्ववत् प्रबाध्यते तेन जगज्जिगीषुणा।
सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि।।

(शिशुपालवधम्– 1/72)

शरणागत वत्सल शिशुपाल – शिशुपाल शत्रुओं का नाश करने में जितना उग्र था शिशुओं की रक्षा करने में भी उतना ही वात्सल्य रखता था। तरुण वर्ग का रक्षक और क्षमाशील भी था। शिशुपाल का दूत सोलहवें सर्ग में स्वयं श्रीकृष्ण को सम्बोधित करते हुए कहता है–

परिपाति स केवलं शिशूनितितन्नामनि मा स्म विश्वसीः।
तरुणानपि रक्षति क्षमी स शरण्यः शरणागतान् द्विषः।।

(शिशुपालवधम्– 16/54)

नीतिनिपुण एवं पुरुषार्थी शिशुपाल – शिशुपाल अत्यन्त तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी था। शास्त्रों का भी उसने अध्ययन किया था। अतः वह नीतिनिपुण भी था और अपने पुरुषार्थ से लक्ष्य को प्राप्त करने वाला भी था।

अतिविस्मयनीयकर्मणोनृपतेर्यस्य विरोधि किंचन।
यदमुक्तनयो नयत्यसावहितानां कुलमक्षयं क्षयम्।।

(शिशुपालवधम्– 16/66)

अर्थात् अत्यन्त आश्चर्य करने योग्य कार्य करने वाले दुराचारी शिशुपाल का कोई भी कार्य विरुद्ध नहीं है, क्योंकि वह नीतिनिपुण है। यह शिशुपाल किसी से नष्ट न किए जाने वाले

शत्रुकुल को नष्ट कर देता है। अतः नीति और पुरुषार्थ से शत्रुओं के अपराजित वंश को समूल नष्ट करने वाले शिशुपाल के लिए कोई काम विरोधी नहीं है। इस प्रकार का पुरुषार्थी और नीतिनिपुण व्यक्तित्व बताकर शिशुपाल के व्यक्तित्व का सकारात्मक पहलू माघ ने प्रस्तुत किया है।

प्रजा को प्रताड़ना देने वाला दुष्ट शिशुपाल – शिशुपालवध महाकाव्य में महाकवि माघ ने अपने प्रतिनायक को अत्यन्त दुष्ट स्वभाव वाला और अपने बल से सदैव प्रजा को प्रताड़ित करने वाला दुष्ट पुरुष बताया है। वह देवताओं, दैत्यों, मानवों सभी के साथ उद्दण्डतायुक्त दुराचरण, तीक्ष्ण एवं निन्द्य व्यवहार करता है। वह किसी भी प्रकार से उचित व्यवहार नहीं करता है। इस दुराचार के कारण सभी पीड़ित हैं। विधाता स्वयं इनसे त्रस्त हैं। इसीलिए देवर्षि नारद श्रीकृष्ण से शिशुपाल का वध करने का निवेदन करते हैं।

स्वयं विधाता सुरदैत्यरक्षसामनुग्रहावग्रहयोर्यदृच्छया।
दशाननादीनभिराद्धदेवतावितीर्णवीर्यातिशयान् हसत्यसौ।।

(शिशुपालवधम्– 1/71)

मिथ्याभिमानी एवं अहंकारी शिशुपाल – शिशुपाल कटुभाषी, ईर्ष्यालू, अहंकारी एवं मिथ्याभिमानी प्रतिनायक है। वह सर्वज्ञ, महाबलशाली और सबको तुच्छ दृष्टि से देखने वाला मिथ्याभिमानी व्यक्तित्त्व वाला है। यज्ञ सभा में पितामह भीष्म, युधिष्ठिर, भगवान् श्रीकृष्ण सहित कृष्ण के पक्ष में उपस्थित समस्त राजाओं को कटु वचन बोलता है। अपने अहंकारयुक्त वचनों से उन्हें तिरस्कृत करता है। प्रतिशोध की भावना से सभा में उपस्थित नृपजनों से कृष्ण, पाण्डव व भीष्म के वध करने की बात कहता है। अपने आपको सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान् तथा श्रीकृष्ण को अत्यन्त निर्बल समझता है।

अथवाध्वमेव खलु यूयमगतिमरुद्गणौजसः।
वस्तु कियदिदमयं न मृधे मम केवलस्य सुखमीक्षितुं क्षमः।।

(शिशुपालवधम्– 15/64)

एक निपुण योद्धा शिशुपाल – शिशुपाल युद्धकाल में अत्यन्त निपुण दिखाया गया है, उसमें एक कुशल योद्धा, एक शूरवीर, एक पराक्रमी के समस्त गुण दृष्टिगोचर होते हैं। वह छलपूर्वक युद्ध नहीं करता, एक निपुण शूरवीर होने का परिचय देता है और युद्ध के नियमों का पालन करते हुए सम्मुख आकर ललकार कर, युद्ध के लिए श्रीकृष्ण को चेतावनी देता है। दूत के साथ श्रीकृष्ण को चेतावनी का सन्देश भेजता है और निपुण योद्धा होने का परिचय देते हुए श्रीकृष्ण की चतुरंगिणी सेना को भागने के लिए विवश कर देता है और प्रभु श्रीकृष्ण को ललकारता है। स्वप्न का अस्त्र स्वप्नास्त्र छोड़कर शिशुपाल श्रीकृष्ण की सेना को गूढ़ अन्धकार में निद्रामग्न कर देता है। श्रीकृष्ण प्रभु हैं अतः उन पर इस अस्त्र का कोई प्रभाव नहीं होता है।

सलिलार्द्रवराहदेहनीलो विदधद्भास्करमर्थशून्यसंज्ञम्।
प्रचलायत लोचनारविन्दं विदधे तद्बलभन्धमन्धकारः।।

(शिशुपालवधम्– 20/33)

उचित स्वप्नोऽपि नीरराशौ स्वबलाम्भोनिधिमध्यगस्तदानीम्।
भुवनत्रयकार्यजागरुकः स परं तत्र परः पुमानजागः।।

(शिशुपालवधम्– 20/36)

इस प्रकार शिशुपाल अपने युद्ध कौशल का परिचय देता है।

8.4.4 धर्मराज युधिष्ठिर का चरित्र-चित्रण

शिशुपालवध महाकाव्य में पाण्डु के ज्येष्ठ पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर का चरित्र माघ ने एक सत्यवादी और धर्मनिष्ठ राजा के रूप में चित्रित किया है। इनका वर्णन महाकाव्य के तेरह से पन्द्रहवें सर्ग तक प्राप्त है। हस्तिनापुर में युधिष्ठिर ने यज्ञ का आयोजन किया और उस यज्ञ में सम्पूर्ण पृथ्वी के समस्त राजाओं को आमन्त्रित किया। इस यज्ञ में महाकाव्य के नायक श्रीकृष्ण तथा महाकाव्य के प्रतिनायक सेना सहित पधारते हैं। युधिष्ठिर आतिथ्य में अत्यन्त कुशल हैं अतः भगवान् श्रीकृष्ण की अगवानी करने के लिए अतिथि सत्कार के उद्देश्य से अपने कनिष्ठ भ्राताओं सहित उनके सम्मुख प्रस्तुत होते हैं और भ्रातृप्रेम के कारण श्रीकृष्ण को शिष्टाचार निभाते हुए गले लगाकर अपना प्रेम अभिव्यक्त करते हैं। श्रीकृष्ण के प्रति आस्था एवं शिष्टाचार को ध्यान में रखते हुए युधिष्ठिर स्वयं सारथि बनकर उनको रथ में लेकर आते हैं।

बह्वपि प्रियमयं तव ब्रुवन्न व्रजत्यनृतवादितां जनः।
सम्भवन्ति यददोषदूषिते सार्वं सर्वगुणसम्पदस्त्वयि।।

धार्मिक व्यक्तित्व धर्मराज – युधिष्ठिर धार्मिक कार्य सम्पादित करने में अत्यन्त कुशल हैं तथा प्रजा के प्रिय भी हैं। वे उचित रीति से प्रजा से प्राप्त धन को विधिपूर्वक सत्पात्रों के लिए दान एवं प्रजा के कल्याण हेतु यज्ञ आदि धार्मिक आयोजन करके अपना एवं प्रजा का चहुँमुखी विकास करने की कामना करते हैं।

स्वापतेयमधिगम्य धर्मतः पर्यपालयमवीवृधं च यत्।
तीर्थगामि करवै विधानतस्तज्जुषस्व जुहवानि चानले।।

(शिशुपालवधम्– 14/9)

ख्याति प्राप्त राजा – लोकप्रिय राजा धर्मराज युधिष्ठिर उत्कृष्ट चरित्र वाले राजा हैं। प्रभु श्रीकृष्ण ने उनके चरित्र का वर्णन करते हुए स्वयं कहा कि आप अपने पराक्रम कौशल से विजय प्राप्ति, उपद्रव रहित होकर पुत्रवत् स्नेह के साथ प्रजा रक्षण आदि के कारण एक निर्भीक निष्पक्ष एवं बेदाग छवि पाकर प्रजा पर राज्य कर रहे हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले राजा ही विश्वजित् यज्ञ को कर सकते हैं। इस यज्ञ के आयोजन का पूर्ण अधिकार आपको है। इसमें किसी भी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं है।

तत्सुराज्ञि भवति स्थिते पुनः कः क्रतुं यजतु राजलक्षणम्।
उद्धृतौ भवति कस्य वा भुवः श्रीवराहमपहाय योग्यता।।

(शिशुपालवधम्– 14/14)

शान्तिप्रिय स्वभाव वाले युधिष्ठिर – जब युधिष्ठिर के द्वारा पितामाह भीष्म एवं श्रीकृष्ण की आद्य पूजा की बात कही गई तो उत्तेजित होकर शिशुपाल द्वारा कटु-वचनों को उपालम्भ रूप में बोला गया, तब भी युधिष्ठिर शान्त एवं गम्भीर बने रहे। शिशुपाल तरह-तरह की अनर्गल बातें कर रहा था, उपस्थित राजाओं के प्रति भी अपशब्दों का प्रयोग कर रहा था तब भी युधिष्ठिर शान्त रहे और शिशुपाल को अल्पबुद्धि मानकर उसे कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया। इस प्रकार शिशुपालवध महाकाव्य में युधिष्ठिर एक प्रजावत्सल राजा, धर्मप्रिय अनुशासित, संयमित, सदाचारी और विनम्र राजा के रूप में महाकवि माघ द्वारा बताये गए हैं।

बोध प्रश्न 2

1 निम्नलिखित प्रश्नों में सत्य (√) तथा असत्य (×) कथन का चयन कीजिये।

(i) भगवान् श्रीकृष्ण शिशुपालवध महाकाव्य के नायक हैं– ( )

(ii) श्रीकृष्ण आदि पुरुष हैं – ( )

(iii) नारद जी ब्रह्मा जी के मानस पुत्र नहीं हैं – ( )

(iv) शिशुपालवध महाकाव्य का प्रतिनायक युधिष्ठिर है – ( )

(v) शिशुपाल पूर्वजन्म में हिरण्यकशिपु था – ( )

(vi) पाण्डु के ज्येष्ठ पुत्र भीम थे – ( )

(vii) युधिष्ठर ने विश्वजित् यज्ञ किया – ( )

अभ्यास प्रश्न 2

1. श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण लिखिये।
2. शिशुपाल के चरित्र की पाँच विशेषतायें लिखिये।

8.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने महाकवि माघ और उनकी कृति शिशुपालवध के विषय में विस्तृत अध्ययन किया है। माघ के पिता का नाम दत्तक तथा पितामह का नाम सुप्रभदेव था। आप राजस्थान के भीनमाल शहर के निवासी थे। माघ का रचनाकाल सातवीं शती माना गया है। संस्कृत साहित्य में उपमा के लिये कालिदास, अर्थगौरव के लिये भारवि, पदलालित्य के लिये दण्डी प्रसिद्ध हैं जबकि माघ तीनों गुणों के लिये प्रसिद्ध हैं। शिशुपालवध में बीस सर्ग तथा 1680 श्लोक हैं। देवताओं का दानवों के साथ युद्ध होने पर देवता हारने लगे तो देवराज इन्द्र ने शिशुपाल के वध के लिये नारद जी को सन्देश लेकर श्रीकृष्ण के पास भेजा और भगवान् श्रीकृष्ण से शिशुपाल के वध का आग्रह किया और भगवान् ने इस कार्य को पूर्ण किया। इसी क्रम में आपने शिशुपालवध महाकाव्य के प्रमुख पात्रों यथा श्रीकृष्ण, नारद, शिशुपाल आदि की चारित्रिक विशेषताओं का भी अध्ययन किया।

8.6 शब्दावली

सूनोः – पुत्र का

कृतिः – रचना

परिचर्या – सेवा

मुहुः – बार-बार

श्रेयसि – कल्याण

ऋते – बिना

मानिनः – स्वाभिमानी लोग

महीयांसः – महान् लोग

ध्रियते – धारण किया जाता है

रिपुः – शत्रु

प्रणय – प्रेम

अभीप्सुः – चाहने वाला

8.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. 'शिशुपालवधम्', डॉ. रामकुमार आचार्य, चौखम्बा पब्लिशर्स, गोकुल भवन, के–37/109, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी, 2000।

2. शिशुपालवधम्, श्री पण्डित हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, के 37/117, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी, 1984 ।

3. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, संस्कृत संस्थान, नया हैदराबाद, लखनऊ, 1997 ।

4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009।

5. अमरकोश, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहर नगर, बंगलो रोड़, दिल्ली, 2011।

8.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. (i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य
   (v) सत्य (vi) असत्य (vii) असत्य
2. दत्तक
3. भीनमाल
4. श्री
5. हिरण्यकशिपु

बोध प्रश्न 2

1. (i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य
   (v) सत्य (vi) असत्य (vii) सत्य

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 9 द्वितीय सर्ग और माघ की प्रशस्तियाँ

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 शिशुपालवध महाकाव्य का महाकाव्यत्व

9.3 शिशुपालवध महाकाव्य का शैलीगत वैशिष्ट्य

- 9.3.1 रस योजना
- 9.3.2 अलंकार योजना
- 9.3.3 प्रकृति-वर्णन
- 9.3.4 रीति
- 9.3.5 भाषा
- 9.3.6 वृत्ति

9.4 द्वितीय सर्ग की कथा

9.5 महाकवि माघ की प्रशस्तियाँ

- 9.5.1 माघे सन्ति त्रयो गुणाः
- 9.5.2 नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते
- 9.5.3 तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः
- 9.5.4 मेघे माघे गतं वयः
- 9.5.5 घण्टामाघ

9.6 सारांश

9.7 शब्दावली

9.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- शिशुपालवध महाकाव्य के महाकाव्यत्व के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- शिशुपालवध महाकाव्य के शैलीगत वैशिष्ट्य जैसे अलंकार, रस, रीति आदि से परिचित हो सकेंगे।
- शिशुपालवध महाकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथा से परिचित हो जायेंगे।
- महाकवि माघ के विषय में प्रचलित प्रशस्तियों को जानेंगे।
- संस्कृत के पारिभाषिक शब्दावली तथा विशिष्ट प्रयोग विधि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

9.1 प्रस्तावना

काव्य वह वाक्य-रचना है जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो। साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ के अनुसार 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' सरसात्मक वाक्य ही काव्य है। रस अर्थात् मनोवेगों का सुखद संचार ही काव्य की आत्मा है। काव्य सहृदय चित्त को अलौकिक आनन्दानुभूति कराता है। काव्य में सत्यं शिवं सुन्दरम् की भावना भी निहित होती है। जिस काव्य में यह सब कुछ पाया जाता है वह उत्तम काव्य माना जाता है। संस्कृत-वाङ्मय में वैदिक काल से ही काव्य का निदर्शन मिलता है। काव्य के दो प्रमुख भेद हैं– महाकाव्य तथा खण्डकाव्य। महाकाव्य में किसी ऐतिहासिक या पौराणिक महापुरुष की सम्पूर्ण जीवन कथा का आद्योपांत वर्णन होता है। संस्कृत काव्यजगत् में माघ विश्रुत एवं समादृत कवि हैं। संस्कृत महाकाव्य की परम्परा में महाकवि माघ द्वारा रचित शिशुपालवध का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी गणना काव्य की बृहत्त्रयी में की जाती है। शिशुपालवध महाकवि माघ की एकमात्र रचना है किन्तु अपने काव्यकौशल एवं वैदुष्य के कारण उन्हें महाकवि, घण्टामाघ आदि उपाधियों से तथा ' माघे सन्ति त्रयो गुणाः', 'मेघे माघे गतं वयः' आदि प्रशस्तियों से अलंकृत किया जाता है।

9.2 शिशुपालवध महाकाव्य का महाकाव्यत्व

शिशुपालवध महाकाव्य में महाकाव्यत्व के सभी लक्षण यथावत् घटित होते हैं। आचार्य दण्डी ने काव्यादर्श(1/14/19) में तथा आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में (6/315-324) महाकाव्य का लक्षण प्रस्तुत किया है। साहित्यदर्पण के अनुसार महाकाव्य का लक्षण इस प्रकार है–

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः ।
सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः ।
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा ।।
शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते ।
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः ।।
इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयं ।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत् ।।
आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा ।
क्वचिन्निन्दा खलादीनां सतां च गुणकीर्तनं ।।
एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः ।
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह ।।
नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते ।
सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत् ।।
सन्ध्यासूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः ।
प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागराः ।।
सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः ।
रणप्रयाणोपयममन्त्रपुत्रोदयादयः ।।
वर्णनीय यथायोगं साङ्गोपाङ्गा अमी इह ।
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा ।।

शिशुपालवध महाकाव्य, महाकाव्य के सम्पूर्ण लक्षण से सुबद्ध एक रचना है। जिसमें महाकाव्य के शास्त्रीय लक्षण घटित होते हैं। इस महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक

महाकाव्य महाभारत से लिया गया है। माघ की इस कृति पर महाकवि कालिदास एवं भारवि का शैलीगत प्रभाव परिलक्षित होता है तथा माघ का वर्णन कौशल एवं कथा का परिमार्जन अपने स्वरूप में इसे विशिष्ट बनाता है।

उपर्युक्त शास्त्रीय लक्षणों के अनुसार शिशुपालवध सर्गबन्ध रचना है। इसके नायक दिव्य भगवान् श्रीकृष्ण हैं। इसका अंगी रस वीर तथा अन्य सहायक रस हैं। शिशुपालवधात्मक दुष्टनिग्रहरूप इसका फल है। वस्तुनिर्देशात्मक इसका मंगलाचरण है। प्रथम सर्ग **''श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्''** इस वंशस्थ छन्द से प्रारम्भ होकर शार्दूलविक्रीडित छन्द से समाप्त हुआ है। इसी प्रकार अन्य सर्गों में छन्द योजना है। प्रत्येक सर्ग के अन्त में आगामी कथांश की सूचना, युद्धयात्रा, द्वारिकापुरी, समुद्र, रैवतकपर्वत, सेनानिवेश, छः ऋतु, पुष्पावचय, जलक्रीडा, सायंकाल, चन्द्रोदय, मधुपान, प्रभात तथा यमुना, सेना प्रयाण, यज्ञसभा, द्वन्द्वादियुद्ध का यथास्थान सांगोपांग वर्णन है। इसका नामकरण इसके फल के आधार पर है। इस महाकाव्य का प्रमुख फल **'शिशुपाल का वध'** है। अतः इसका नामकरण भी इसी के आधार पर किया गया है।

9.3 शिशुपालवध महाकाव्य का शैलीगत वैशिष्ट्य

9.3.1 रस योजना

शिशुपालवध महाकाव्य में भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा शिशुपाल का वध मुख्य कार्य के रूप में निरूपित किया गया है जिसके निर्वहन के लिए इसमें युद्ध इत्यादि का वर्णन है और इन सभी वर्णनों में प्रधानभूत अंगीरस वीर रस परिपाक को प्राप्त हुआ है। अन्य अंगभूत अप्रधान्य रसों का भी संयोजन कवि कौशल से परिलक्षित हुआ है। रसों का इस महाकाव्य में प्रधान तथा अंग के रूप में किस प्रकार से संयोजन किया गया इसका वर्णन हमें श्रीकृष्ण, उद्धव तथा बलराम के साथ मन्त्रणा के प्रसंग में प्राप्त होता है। युद्ध सम्बन्धी इस मन्त्रणा में द्वितीय सर्ग में रस विषयक वर्णन इस प्रकार है–

तेजः क्षमा वा नैकान्तः कालज्ञस्य महीपतेः ।
नैकमोजः प्रसादो वा रसभागविदः कवेः।।

(शिशुपालवध–2/83)

समधर्मी राजा को केवल तेज (वीर) या क्षमा धारणा करने का नियम नहीं है क्योंकि रसभाव के ज्ञाता कवि के लिए ओजगुणयुक्त या प्रसादगुणयुक्त ही प्रबन्ध की रचना करने का नियम नहीं है।

स्थायिनोऽर्थे प्रवर्तन्ते भावाः संचारिणो यथा।
रसस्यैकस्य भूयांसस्तथा नेतुर्महीभृतः।।

(शिशुपालवध–2/87)

जिस प्रकार (शृंगारादि) रस के (रस के आदि) स्थायीभाव के लिए अनेक संचारी (तथा व्यभिचारी आदि) भाव प्रवृत्त होते हैं उसी प्रकार क्षमाशील स्थिर एक नायक के लिए कार्य को घटित करने वाले बहुत से सहायक प्रवृत्त होते हैं।

9.3.2 अलंकार योजना

त्रयो गुणाः से तात्पर्य है कि उपमादि अलंकार, अर्थगौरव जो अलंकार से आता है तथा पदलालित्य जो शब्दालंकारों से आता है इस प्रकार कवि ने ''सौन्दर्यमलंकारः, अलंकरोति

इति अलंकारः'', इन उक्तियों को सार्थक करते हुये अलंकारों का साधु प्रयोग किया है। तीनों गुणों में उपमालंकार माघ का एक विशिष्ट गुण है। कवि उपमालंकार के वर्णन में निपुण है।

भारवि तथा दण्डी ने शब्दालंकारों में यमक और श्लेष में अधिक रुचि प्रदर्शित की है किन्तु भारवि के अर्थगौरव के लक्ष्य को विस्मृत नहीं किया जा सकता है। अर्थालंकारों का प्रयोग करते समय भी भारवि चमत्कार को अपना लक्ष्य नहीं बनाते महाकवि माघ भी अर्थालंकार जैसे उपमा, दीपक, दृष्टान्त, उत्प्रेक्षा, रूपक इत्यादि और शब्दालंकार, यमक, अनुप्रास, वक्रोक्ति, श्लेष इत्यादि दोनों के प्रयोग में निपुण हैं।

9.3.3 प्रकृति वर्णन

कवि माघ प्रकृति के वर्णन में सिद्धहस्त कवि हैं उनके द्वारा प्रकृति को अनेक स्थान पर जीवन्त रूप से प्रतिपादित किया गया है। कवि ने चतुर्थ सर्ग में रैवतक पर्वत के वर्णन में, षष्ठ सर्ग में षड्ऋतु वर्णन में, नवम सर्ग में सूर्यास्त वर्णन में एवं एकादश सर्ग में प्रभात वर्णन करके प्रकृति के वर्णन में अपनी सिद्धहस्तता प्रदर्शित की है। इस प्रकार से उनके ग्रन्थ में प्रकृति वर्णन के अनेक प्रसंग हैं, जहां एक ओर प्रकृति मानवीय गुणों से परिपूर्ण जीवन्त व्यक्ति के समान व्यवहार करती सी प्रतीत होती है, तो वहीं दूसरी ओर कहीं-कहीं पर उनका वर्णन कृत्रिम भी प्रतीत होता है। कवि का प्रकृति वर्णन निम्नांकित उद्धरणों से समझा जा सकता है।

जलधरावलिरप्रतिपालितस्तस्तसमया समयाज्जगतीश्वरम्।।

(शिशुपालवध–6/25)

चमकती हुई चंचल बिजली वाली सघन बादलों से भरी मेघ पंक्ति अपने उचित समय पर ठीक उसी तरह उपस्थित हुई जैसे चंचल नेत्रों वाली, पुष्प यौवन वाली नायिका अपने संकेतित समय पर प्रिय को प्रतीक्षा न कराकर समय पर उसके पास उपस्थित होती है।

प्रस्तुत श्लोक में प्रातःकालीन सूर्य का बालरूप में चित्रण कवि के सरस हृदय का परिचायक है।

उदयशिखरिश्रृंगप्रांगणेष्वेव रिंगन् सकमलमुखहासं वीक्षितः पद्मिनीभिः।।

(शिशुपालवध–11/47)

रैवतक पर्वत से बहने वाली नदियों के वर्णन में कवि अपने उदात्त हृदय का परिचय देता है–

अपशंकमंकपरिवर्तनोचिताश्चलिताः पुरः पतिमुपेतुमात्मजाः।

(शिशुपालवध–4/47)

भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा दर्शित वसन्त का वर्णन–

नव पलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपंकजम्।

(शिशुपालवध–6/2)

9.3.4 रीति

शिशुपालवध महाकाव्य में माघ ने गौडी रीति का प्रयोग किया है। समास बहुल रचना, श्लेष अलंकारिक सौन्दर्य की अधिकता, ओजगुणप्रधान वाणी आदि गौडी रीति की विशेषतायें हैं। माघ के शिशुपालवध में गौडी रीति के ये समस्त गुण सहजप्राप्त होते हैं, अतः शिशुपालवध में गौडी रीति का प्राधान्य है तथा कुछ अंशों में वैदर्भी रीति का प्रयोग भी मिलता है।

9.3.5 भाषा

शिशुपालवध महाकाव्य में समास की बहुलता है। क्लिष्ट व विकट पदों का गुम्फन है, अतः भाषा की दृष्टि से शिशुपालवध अत्यन्त क्लिष्ट भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। नवीन शब्दों का प्रयोग तथा वर्णन वैचित्र्य शिशुपालवध महाकाव्य की विशेषता है।

9.3.6 वृत्ति

काव्यशास्त्र में चार प्रकार की वृत्तियाँ स्वीकार की गयी हैं – कैशिकी, सात्त्वती, आरभटी और भारती। जहाँ वीर रस प्रधान होता है और ओजपूर्ण वाणी का प्रयोग होता है वहाँ सात्त्वती और आरभटी वृत्ति का प्रयोग किया जाता है। जहाँ श्रृंगार का वर्णन होता है वहाँ कैशिकी वृत्ति तथा रौद्रवर्णनों के प्रसंग में भारती वृत्ति का प्रयोग किया जाता है। शिशुपालवध महाकाव्य में प्रसंगवश सभी वृत्तियों का आश्रय लिया गया है फिर भी ग्रन्थ के वीर रस प्रधान होने से सात्त्वती और आरभटी वृत्ति का अधिक प्रयोग किया गया है।

बोध प्रश्न 1

1. **नीचे दिये गये कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (×) कथन का चयन कीजिये –**

   (i) शिशुपालवध महाकाव्य का कथानक महाभारत से ग्रहीत है – ( )

   (ii) शिशुपालवध महाकाव्य का प्रारम्भ शार्दूलविक्रीडित छन्द से हुआ है – ( )

   (iii) शिशुपालवध महाकाव्य का फल शिशुपाल का वध है – ( )

   (iv) षड्ऋतु वर्णन नवम सर्ग में किया गया है – ( )

   (v) काव्यशास्त्र में चार प्रकार की वृत्तियाँ स्वीकार की गयी हैं – ( )

2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये –**

   (i) शिशुपालवध महाकाव्य के नायक ..... हैं।

   (ii) शिशुपालवध महाकाव्य का अंगीरस ..... है।

   (iii) ..... सर्ग में प्रभात वर्णन वर्णित है।

   (iv) शिशुपालवध महाकाव्य में माघ ने ..... रीति का प्रयोग किया है।

   (v) रौद्रवर्णनों के प्रसंग में ..... वृत्ति का प्रयोग किया जाता है।

अभ्यास प्रश्न 1

1. शिशुपालवध के महाकाव्यत्व को स्पष्ट कीजिए।
2. शिशुपालवध की काव्यशैली पर प्रकाश डालिए।

9.4 द्वितीय सर्ग की कथा

नारद जी के लौटने के पश्चात् धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सम्मिलित होकर सहायता करने के लिए आमन्त्रित श्रीकृष्ण यह मन्त्रणा करने के लिए,'**जाज्वल्यमाना जगतः शान्तयेसमुपेयुषी**' कि उन्हें मित्रकार्य सम्पादन करने के लिए युधिष्ठिर के यज्ञ में सम्मिलित होने हस्तिनापुर जाना चाहिए अथवा देवकार्य सम्पादनार्थ शिशुपाल के साथ युद्ध करने चेदिदेश जाना चाहिए? इस विषय पर मन्त्रणा करने के लिये उद्धव तथा बलराम के साथ मन्त्रणागृह में पहुँचे। श्रीकृष्ण ने कहा – हमलोगों के बिना भी युधिष्ठिर लोकविजयी भीम, अर्जुन आदि भ्राताओं के साथ यज्ञ कर सकते हैं। अतएव जगत्पीडनकर्ता शत्रु की उपेक्षा करना उचित प्रतीत नहीं होता। अपना अभिमत देने के उपरान्त श्रीकृष्ण ने उद्धव तथा भ्राता बलराम से भी अपनी-अपनी सम्मति देने की प्रार्थना की।

यियक्षमाणेनाहूतः पार्थेनाऽथद्विषन्मुरम्।
अभिचैद्यं प्रतिष्ठासुरासीत्कार्यद्वयाकुलः।।

(शिशुपालवध–2/1)

पद एवं अवस्था में बड़े होने के कारण यद्यपि उद्धव जी पहले बोलना चाहते थे तथापि मद के नशे में चूर अधिक क्रुद्ध होने से उत्पन्न स्वेदबिन्दुओं से आर्द्र एवं रक्तवर्ण शरीर वाले बलराम जी को बोलने का इच्छुक जानकर वे चुप हो गए। उसके बाद बलराम जी ने भाँति-भाँति की युक्ति तथा दृष्टान्तों के द्वारा श्रीकृष्ण के वचन का समर्थन करते हुए शीघ्रातिशीघ्र शिशुपाल के प्रति अभियान करने की अपनी सम्मति दी।

तदन्तर श्रीकृष्ण ने अपने नेत्रों से संकेत कर उद्धव जी को अपनी सम्मति देने के लिए कहा। उनका संकेत पाकर उद्धव जी ने तर्कपूर्ण विविध युक्तियुक्त वचनों से बलराम के प्रत्येक वचनों का खण्डन कर धर्मराज युधिष्ठिर के यहाँ यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए कहा तथा उन्होंने यह भी कहा कि अपने गुप्तचरों द्वारा शिशुपाल के पक्ष के राजाओं में फूट डालना तथा अपने पक्ष के राजाओं को युद्ध के लिए तैयार होकर युधिष्ठिर के यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए सूचित कर देना चाहिए, क्योंकि जब युधिष्ठिर सहित सभी पाण्डव आप (श्रीकृष्ण) की अधिक भक्ति एवं पूजा सत्कार करने लगेंगे तो शिशुपाल उसे सहन नहीं कर पाएगा और अपने चपल स्वभाव से आपकी निन्दा करने लगेगा।

सहिष्ये शतमागांसि सूनोस्त इति यत्त्वया।
प्रतीक्ष्यं तत्प्रतीक्ष्यायै पितृस्वस्रे प्रतिश्रुतम्।।

(शिशुपालवध–2/108)

इस प्रकार अपनी बुआ के प्रति शिशुपाल के सौ अपराधों (100) को सहन करने के आपके पूर्व प्रतिज्ञात वचन का सम्यक् पालन कर चुकने पर जब आप शिशुपाल का वध करेंगे तब उसके यहाँ चढाई करने के उद्देश्य की सिद्धि उसी हस्तिनापुर में स्वतः सम्पन्न हो जायेगी। महाभारत में भीष्म से विवाद करते हुये श्रीकृष्ण को भी वह अपशब्द कहता है तथा युद्ध की चुनौती देता है। तब श्रीकृष्ण कहते हैं–

अपराधशतं क्षाम्यं मातुरस्थैव याचने ।
दत्तं मया याचितं च तद्वै पूर्णं हि पार्थिवाः।।

महाभारत

इस प्रकार श्रीकृष्ण ने राजनीति निपुण, पितृव्य एवं मन्त्री उद्धव के वचनानुसार ही कार्य करने का निर्णय लिया और सभा विसर्जित कर कार्यान्तर साधन में लग गए।

9.5 महाकवि माघ की प्रशस्तियाँ

9.5.1 माघे सन्ति त्रयो गुणाः

संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में उपमा अलंकार काव्य में चमत्कार उत्पन्न करने वाला होता है, अर्थगौरव काव्य का आत्मवर्धक गुण है तथा पदलालित्य के द्वारा काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि होती है। प्रत्येक कवि में कविता करने के लिये ईश्वर द्वारा दी गयी प्रतिभा होती है किन्तु उन कवियों में कुछ ऐसे गुण और शैलीगत वैशिष्ट्य भी होते हैं जो उसे और उसकी कृति को अन्य कवियों से भिन्न करते हैं। संस्कृत साहित्य में प्रत्येक कवि अपने शैलीगत वैशिष्ट्य के द्वारा जाना जाता है। महाकवि कालिदास उपमा के लिये, भारवि अर्थगौरव के लिये और दण्डी पदलालित्य के लिये प्रसिद्ध हैं किन्तु महाकवि माघ की कृति में उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य इन तीनों गुणों का सुन्दर समन्वय दिखायी देता है, इसीलिये कहा गया है–

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यम् माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

महाकवि माघ कालिदास के समान उपमा के प्रयोग में सिद्धहस्त थे। माघ के काव्य में उपमा की छटा दर्शनीय है–

दधानमम्भोरुहकेसरद्युतीर्जटाः शरच्चन्द्रमरीचिरोचिषम्।
विपाकपिंगास्तुहिनस्थलीरुहो धराधरेन्द्रं व्रततीततीरिव।।

(शिशुपालवध–1/5)

विद्वद्भिरागमपरैर्विवृतं कथचिंच्छुवाऽपि दुर्ग्रहमनिश्चितधीभिरन्यः।
श्रेयान्द्विजातिरिव हन्तुमधानि दक्षं गूढार्थमेष निधिमन्त्रगणं बिभर्ति।।

(शिशुपालवध–4/37)

यहाँ प्रथम श्लोक में उन्होंने आकाशमार्ग से उतरते हुये नारद जी की पर्वतराज हिमालय के साथ उपमा देकर सजीव की निर्जीव से उपमा दी है तो वहीं दूसरे श्लोक में रैवतक पर्वत की द्विज से उपमा देकर निर्जीव को सजीव के रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार सजीव और निर्जीव के मध्य अपनी उपमाओं के द्वारा चमत्कार उत्पन्न कर देना महाकवि माघ का वैशिष्ट्य है। उपमा के समान अर्थगौरव के प्रयोग में भी माघ सिद्धस्त हैं।

अपशंकमंकपरिवर्तनोचितांचलिताः पुरः पतिमुपैतुमात्मजाः।
अनुरोदितीव करुणेन पत्त्रिणां विरुतेन वत्सलतयैष निम्नगाः।।

(शिशुपालवध–4/47)

अर्थात् पति के समीप जाती हुई क्रोडक्रीडिता आत्मजाता पुत्री के समान समुद्र को जाती हुई आत्मजाता क्रोडक्रीडिता अपने से उत्पन्न होकर बीच में बहती हुई नदियों को देखकर स्थानीय यह रैवतक पर्वत वत्सलता के कारण रो रहा है।

इस दृश्य को महाकवि माघ ने अत्यन्त मार्मिक रूप में चित्रित किया है। यहाँ रैवतक पर्वत पर कलरव करने वाले पक्षियों का स्वर पिता के रुदन के समान है। पर्वत के बीच से बहने वाली नदियाँ अंशभूत पुत्री के तुल्य हैं। वह पुत्री पर्वतरूपी पिता की गोद में खेली है और समुद्र में आकर मिल रही है तो पिता को अपनी पुत्री से बिछड़ने का दुःख निरीह बना रहा है। यहाँ पिता-पुत्री का प्रेम, अपने अंश से उत्पन्न होना, गोद में खिलाया जाना, योग्य

व्यक्ति को सौंप देना इन सबका वर्णन महाकवि ने एक श्लोक में कर अर्थगौरव का सुन्दर निदर्शन किया है।

उदयशिखररिश्रृंग प्रांगणेष्वेष रिंगन् सकमलमुखहासं वीक्षितः पद्मनीभिः।
वितत मृदुकराग्रः शब्दयन्त्या वचोभिः परिपतति दिवोऽङ्के हेलया बालसूयः।।

(शिशुपालवध–11/47)

जब प्रातःकाल बालसूर्य लाल-लाल कोमल किरणों को फैलाकर आगे ऊपर आकाश की ओर बढ़ने लगा और पक्षि-समूह कलरव करने लगे, तब ऐसा आभास हो रहा था मानो 'दिव्' (आकाश) रूपिणी माता कोमल हाथ फैलाये हुए बालसूर्य को उच्च स्वर से पुकारकर बुला रही हैं और पुत्ररूप वह बालसूर्य मातृरूपिणी 'दिव्' (आकाश) की ओर बढ़ता चला जा रहा है। वस्तुतः प्रस्तुत श्लोक में अत्यन्त गाम्भीर्यपूर्ण अर्थगौरव प्रदर्शित हुआ है और अन्यत्र भी अर्थगौरव के अनेक उदाहरण हैं।

पदलालित्य में भी माघ अतुलनीय हैं। माघ की रचना को पढ़ने से कहीं-कहीं पर ऐसी प्रतीति होती है मानो स्वयं प्रसन्न होकर सरस्वती ने ही एक-एक पद माघ के बुद्धि पटल पर अंकित किया हो। महाकवि माघ वसन्तकाल में भौंरे के गुंजन का ध्वनिमय चित्रण करते हैं–

मधुरया मधुबोधितमाधवी मधुसमृद्धिसमेधित मेधया।
मधुकराङ्गनया मुहुरुन्मद ध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे।।

(शिशुपालवध–6/20)

इसी प्रकार राक्षसों के उपद्रव से पीड़ित देवांगनाओं का वर्णन भी यमक अलंकार से युक्त पदलालित्य से चमत्कृत प्रतीत होता है –

राजीवराजीवशलोलभृङ्गं मुष्णन्तमुष्णं ततिभिस्तरूणाम्।
कान्तालकान्त ललनाः सुराणां रक्षोभिरक्षोभितमुद्ववहन्तम्।।

(शिशुपालवध–4/9)

इस प्रकार शिशुपालवध महाकाव्य में पग-पग पर उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य की छटा देखी जा सकती है। अतः 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' यह उक्ति माघ के लिये अक्षरशः सत्य है, इसमें किसी को विप्रतिपत्ति नहीं है।

9.5.2 नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते

महाकवि माघ एक रससिद्ध कवि हैं। अपनी रचना शिशुपालवध में उन्होंने वीररस को अंगी बताते हुए श्रृंगारादि विविध रसों का सम्यक् अभिव्यंजन किया है। इस रस प्रवणता को पढ़ते हुए सहृदय का चित्त आनन्दविभोर हो उठता है। शिशुपालवध में कवि ने अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। जिसमें पंचमसर्ग में वसन्ततिलका तथा एकादशसर्ग में मालिनी छन्द का प्रयोग प्रत्येक सहृदय को आह्लादित कर देता है। अपनी इस रचना में महाकवि माघ ने विभिन्न भावों एवं विषयों के वर्णन के लिए अनेक नूतन शब्दों का प्रयोग किया है। जो सामान्यतः अन्यकृतियों में अनुपलब्ध है। सर्वथा अप्रचलित शब्दों के प्रयोग से माघ ने साहित्य समाज को चमत्कृत सा कर दिया है। शिशुपालवध के प्रारम्भिक नव सर्गों में महाकवि माघ ने असंख्य नूतन शब्दों का प्रयोग किया है। जिसके कारण मल्लिनाथ सूरि जिन्होंने कालिदास सहित भारवि, माघ इत्यादि अनेक कवियों के ग्रन्थों का आलोडन विलोडन किया एवं टीका लिखी लेकिन उनको नवीन शब्द भण्डार की न्यूनता नहीं लगी

लेकिन जब उनके द्वारा माघ (शिशुपालवध) पर टीका लिखी गयी तब मल्लिनाथ ने उनके शब्द भण्डार की प्रशंसा करते हुए कहा है–'' **'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते'।** अर्थात् इसके नव सर्गों के अनन्तर नूतन शब्दराशि परिलक्षित नहीं हुयी है।

9.5.3 तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः

संस्कृत साहित्य में महाकवि भारवि अपने अर्थगौरव के लिये विख्यात हैं। उनकी अनुपम कृति किरातार्जुनीयम् भावों की उदात्तता एवं अर्थान्तरन्यास के कारण विद्वत्समाज में अत्यन्त प्रशंसित हुई किन्तु जब साहित्य के क्षेत्र में महाकवि माघ की कृति शिशुपालवध आई तब काव्यशास्त्रियों का मन्तव्य बदला और उन्होंने कहा–

तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते तु पुनर्माघे भारवेर्भारवेरिव।।

भारवि का वैभव तब तक ही रहा जब तक माघ कवि का उदय नहीं हुआ। कुछ विद्वान् तो यहाँ तक भी स्वीकार करते हैं कि माघ के बाद भारवि का प्रभाव कम हो गया। इस परिप्रेक्ष्य में शिशुपालवध और किरातार्जुनीय का तुलनात्मक अध्ययन किये जाने पर विद्वानों ने यह माना कि शिशुपालवध महाकाव्य का आदर्श किरातार्जुनीय था। दोनों ही महाकवियों की ख्याति एक-एक महाकाव्य पर आश्रित है तथा दोनों ही युगप्रवर्तक कवि हैं। दोनों ही महाकाव्य का कथानक महाभारत से गृहीत है तथा दोनों ही महाकाव्यों में वीर रस अंगी है। भारवि के समान माघ ने भी शिशुपालवध महाकाव्य का प्रारम्भ 'श्री' शब्द द्वारा ही किया है–

किरातार्जुनीय – श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्।

शिशुपालवध – श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत्।

जब हम माघ के काव्य का गहन अध्ययन करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि वे प्रकाण्ड पण्डित तो थे ही साथ ही उन्होंने अपने रचनाकाल में अन्य कवियों से प्रेरणा ली जैसे महाकवि कालिदास से भाव गाम्भीर्य एवं उपमा, भारवि से भाषा सौष्ठव, भट्टि से पाण्डित्य, कुमारदास से सुकुमारता और दण्डी से पदलालित्य ग्रहण किया।

9.5.4 मेघे माघे गतं वयः

इहान्वयमुखेनैव सर्वं व्याख्यायते मया।
नामूलं लिख्यते किंचिन्नानपेक्षितमुच्यते।।

इस सम्पूर्ण व्याख्या में प्रत्येक शब्द प्रमाणपूर्वक अन्वयमुख अर्थात् कवि के समान ही लिखा गया है, इसमें कोई भी प्रसंग अमूल नहीं है और अपेक्षित भी नहीं है। इस प्रकार के टीकाकार जिन्होंने पांच महाकाव्यों सहित षोडश काव्यों पर टीकायें लिखी उस श्रीमहोपाध्यायकोलाचलमल्लिनाथ का कहना है कि मेघदूत एवं माघकृत शिशुपालवध के पठन-पाठन में ही एक व्यक्ति अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है।

यह कथन इसलिये है क्योंकि इस माघ ग्रन्थ के परिशोधात्मक अनुशीलन में व्याकरण, दर्शन, अलंकार, कोश एवं नाना शास्त्रविषयक ज्ञान अपेक्षित है जो केवल सद्यः यत्न से प्राप्ति योग्य नहीं हैं इसमें जीवनपर्यन्त का श्रम आवश्यक है।

9.5.5 घण्टामाघ

माघ के काव्य में प्राकृतिक तथा मानवीय वर्णन अत्यन्त सजीव है। प्रकृति वर्णन के प्रसंग में रैवतक पर्वत पर सूर्योदय एवं चन्द्रमा के अस्तंसमय का एक साथ वर्णन करने वाला पद्य है–

उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टाद्वयपरिवारितवारणेन्द्रलीलाम्।।

(शिशुपालवध–4/20)

अर्थात् रैवतक पर्वत के एक तरफ सूर्य उदित हो रहा है तथा दूसरी ओर चन्द्रमा अस्त हो रहा है। इस समय रैवतक पर्वत उस हाथी के समान सुशोभित हो रहा है जिसके दोनों तरफ विशाल घण्टे लटके हुए हों। महाकवि माघ की इस कल्पना से मुग्ध होकर समालोचकों ने उन्हें **'घण्टामाघ'** तथा **'घण्टाकवि'** की उपाधि से विभूषित किया है।

प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने भी माघ की अत्यन्त प्रशंसा करते हुए कहा है–

'धन्यो माघकविर्वयन्तु कृतिनस्तत्सूक्तिसंसेवनात्'। अर्थात् महाकवि माघ धन्य हैं तथा उनकी रचना का परिशीलन करने से हम भी धन्य हैं।

''काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्''।

काव्याभिलाषी जनों का समय काव्यशास्त्र चिन्तन में व्यतीत होता है। ऐसे काव्याभिलाषीजनों को माघ का चिन्तन, भजन एवं अनुशीलन करना चाहिये क्योंकि इसके अनुशीलन से सम्पूर्ण कलाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

माघं भजन्तु यदि काव्यकलाभिलाषः।
माऽघं भजन्तु यदि मोक्षपथाभिलाषः।।

बोध प्रश्न 2

1. नीचे दिये गये कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (×) कथन का चयन कीजिये।

(i) महाकवि कालिदास अर्थगौरव के लिये प्रसिद्ध हैं– ( )

(ii) किरातार्जुनीयम् माघ की कृति है – ( )

(iii) शिशुपालवध महाकाव्य का प्रारम्भ श्री शब्द से होता है – ( )

(iv) शिशुपालवध महाकाव्य के एकादश सर्ग में मालिनी छन्द का प्रयोग किया गया है– ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये –

(i) ..... पदलालित्य के लिये प्रसिद्ध हैं।

(ii) माघे सन्ति ..... गुणाः।

(iii) किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का कथानक ..... से गृहीत है।

(iv) माघ ने ..... सर्ग में वसन्ततिलका छन्द का प्रयोग किया है।

अभ्यास प्रश्न 2

1. शिशुपालवध के द्वितीय सर्ग के कथानक का सारांश लिखिए।
2. 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' पर प्रकाश डालिए।
3. 'नवसर्गगते माघे नव शब्दो न विद्यते' की व्याख्या कीजिए।

9.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने महाकवि माघ की कृति 'शिशुपालवध' के विषय में अध्ययन किया। शिशुपालवध महाकाव्य, महाकाव्य के सम्पूर्ण लक्षण से युक्त कृति है। वीर रस प्रधान इस नाटक का मंगलाचरण वस्तुनिर्देशात्मक है। रस योजना, अलंकार योजना, भावगाम्भीर्य, प्रसाद एवं माधुर्य गुण आदि शिशुपालवध महाकाव्य की विशेषतायें हैं। इस इकाई में द्वितीय सर्ग की कथा का वर्णन किया गया है जिसमें श्रीकृष्ण उद्धव एवं बलराम के साथ मन्त्रणा करते हैं। शिशुपालवध महाकाव्य संस्कृत साहित्य की एक अद्वितीय रचना है। इस एकमात्र रचना के द्वारा ही महाकवि माघ ने संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त की। महाकवि माघ के विषय में 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः', 'नवसर्गगते माघे नवशब्दो ने विद्यते' 'मेघे माघे गतं वयः' जैसी प्रशस्तियाँ प्रसिद्ध हैं, जिसका अध्ययन आपने इस इकाई में किया है।

9.7 शब्दावली

चित्त – मन

वाङ्मय – साहित्य

आद्योपांत – आदि से अन्त तक

आर्द्र – भीगा हुआ

दृष्टान्त – उदाहरण

अम्भोरुहः – कमल

मरीचि – चन्द्रमा

तुहिनः – बर्फ के

हन्तुम् – मारने के लिये

ततिः – पंक्ति

तरुः – वृक्ष

मुष्णन्तम् – हरते हुये को

अक्षोभितः – अनभिभूत

9.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. शिशुपालवधम् – व्याख्याकार पं0 हरगोविन्दशास्त्री,
2. महाभारत – गीताप्रेस गोरखपुर,
3. 'शिशुपालवधम्', डॉ. रामकुमार आचार्य, चौखम्बा पब्लिशर्स, गोकुल भवन, के–37/109, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी, 2000।

4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009।

9.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) गलत (v) सही ।
2. (i) श्रीकृष्ण (ii) वीर (iii) एकादश (iv) गौडी (v) भारती ।

बोध प्रश्न 2

1. (i) गलत (ii) गलत (iii) सही (iv) सही ।
2. (i) दण्डी (ii) त्रयो (iii) महाभारत (iv) पंचम ।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 10 शिशुपालवधम् (द्वितीय सर्ग) श्लोक 26-37

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 काव्यांश की व्याख्या

- 10.2.1 राजनीतिक चिन्तन
- 10.2.2 प्रायोगिक ज्ञान का महत्त्व
- 10.2.3 राजाओं के लिये अनिवार्य तत्त्व
- 10.2.4 राजनीति में गोपनीयता का महत्त्व
- 10.2.5 वैभव सम्पन्न व्यक्ति के कर्त्तव्य
- 10.2.6 शत्रु के सम्पूर्ण विनाश की मन्त्रणा
- 10.2.7 शत्रु और मित्र के प्रकार

10.3 सारांश

10.4 शब्दावली

10.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आप –

- माघ की काव्य कला का उत्कर्ष जान सकेंगे।
- राजनीति के अनेक तथ्यों को जान सकेंगे।
- राजनीति के कुछ पारिभाषिक शब्दों से परिचित हो सकेंगे।
- शत्रु और मित्र का भेद जान सकेंगे।
- अनुष्टुप् छन्द का लक्षण जान सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

पूर्व इकाई में आपने महाकवि माघ का परिचय प्राप्त किया। संस्कृत साहित्य में शिशुपालवध महाकाव्य एक अप्रतिम रचना है। अतः इसका परिगणन बृहत्त्रयी में किया गया है। इस महाकाव्य की ख्याति के कारण ही महाकवि माघ को संस्कृत साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त है। संस्कृत जगत् में इनके लिये एक उक्ति प्रसिद्ध है –

"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।"

अर्थात् कालिदास की उपमा प्रसिद्ध है, भारवि का अर्थगौरव और दण्डी का पदलालित्य प्रसिद्ध है परन्तु माघ में उपमा, अर्थगौरव तथा पदलालित्य नामक तीनों ही गुण समाहित हैं।

अपने इन्हीं गुणों के कारण महाकवि माघ संस्कृत साहित्य के अद्वितीय कवि माने जाते हैं। उन्होंने कथानक की स्वल्पता के अभाव में भी अपने वर्णन कौशल के कारण इस महाकाव्य को स्पृहणीय बनाया है। यह महाकाव्य राजनीति, दर्शन, व्याकरण आदि की प्रयोग पटुता का निदर्शन है। उनके विषय में यह उक्ति भी प्रसिद्ध है कि 'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते'। अर्थात् शिशुपालवध के नौ सर्गों के अनन्तर नये शब्दों के निर्माण की सीमा ही समाप्त हो जाती है। शिशुपालवध के ही कारण माघ को 'घण्टा माघ' की उपाधि से भी अलंकृत किया गया है।

आपके पाठ्यक्रम में शिशुपालवध के द्वितीय सर्ग के कुल 27 श्लोक निर्धारित हैं। उनमें से इस इकाई में आप द्वितीय सर्ग के 26 से 37 श्लोकों का अध्ययन करेंगे। इन श्लोकों में अनेक राजनीतिक तथ्यों का उल्लेख हुआ है। जो प्राचीन भारतीय राजनीति के तथ्यों से आपको अवगत करायेंगे। श्रीकृष्ण और उद्धव के मध्य चल रही बात-चीत के माध्यम से इस सर्ग में यह प्रतिपादित किया गया है कि शिशुपाल का वध करने के लिये प्रथमतः श्रीकृष्ण को युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सम्मिलित होना चाहिये। वस्तुतः शिशुपाल का वध करना और राजसूय यज्ञ में एक साथ सम्मिलित होना श्रीकृष्ण के लिये कठिन प्रतीत हो रहा था। अतः उन्होंने उद्धव जी तथा बलराम जी से शिशुपाल पर आक्रमण करने का समाधान पूछा। इस पर बलराम जी ने शिशुपाल पर आक्रमण करने का सुझाव दिया। किन्तु उद्धव ने नीति के अनेक तत्त्वों का उल्लेख करते हुये यह परामर्श दिया कि शिशुपाल पर सहसा आक्रमण न किया जाये। प्रथमतः युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सम्मिलित होना ही उचित होगा। इस प्रसंग में आये हुये पद्यों में अनेक गहन रहस्य छिपे हुये हैं। जिन्हें आप प्रस्तुत श्लोकों में पढ़ेंगे। शिशुपालवध के द्वितीय सर्ग से संकलित इन श्लोकों में श्रीकृष्ण, उद्धव और बलराम की पारस्परिक चर्चा निबद्ध की गई है। इन श्लोकों के अध्ययन से आप केवल राजनीतिक विषयों से परिचित नहीं होंगे अपितु आपको अनेक जीवनोपयोगी विषयों का भी ज्ञान होगा। जैसे – षड् गुण, तीन शक्तियाँ, तीन सिद्धियाँ एवं तीन उदय आदि। इसी प्रकार कतिपय दार्शनिक सिद्धान्तों का भी परिचय प्रस्तुत प्रसंग में प्राप्त होगा। शत्रु मित्र आदि का लक्षण भी आप यहाँ प्राप्त कर सकेंगे जिससे आप अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर पायेंगे।

10.2 काव्यांश की व्याख्या

10.2.1 राजनीतिक चिन्तन

षड्गुणाः शक्तयस्तिस्रः सिद्धयश्चोदयास्त्रयः।
ग्रन्थानधीत्य व्याकर्तुमिति दुर्मेधसोऽप्यलम्।। 26।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने ग्रन्थों का अध्ययन करके मन्द बुद्धि लोगों के द्वारा भी गुणों, शक्तियों तथा सिद्धि आदि की व्याख्या करने के सामर्थ्य का उल्लेख किया है।

अन्वयः – दुर्मेधसः अपि ग्रन्थान् अधीत्य-गुणाः षट्, शक्तयः तिस्रः, सिद्धयः तिस्रः, उदयाः त्रयः इति व्याकर्तुम् अलम् (भवन्ति)।

शब्दार्थ – दुर्मेधसः = अल्पबुद्धि लोग, अपि = भी, ग्रन्थान् = ग्रन्थों को, अधीत्य = अध्ययन करके, गुणाः = गुण, षट् = छः हैं, शक्तयः = शक्तियाँ, तिस्रः = तीन हैं, सिद्धयः = सिद्धियाँ, तिस्रः = तीन हैं, उदयाः = अवस्था, त्रयः = तीन हैं, इति = इस प्रकार, व्याकर्तुम् = व्याख्या करने में, अलम् = समर्थ होते हैं।

अनुवाद – अल्पबुद्धि लोग भी (नीतिशास्त्र आदि) ग्रन्थों का अध्ययन करके यह बता सकते हैं कि गुण छः होते हैं, शक्तियाँ तीन होती हैं, सिद्धियाँ तीन होती हैं तथा उदय भी तीन होते हैं। इस प्रकार के विषयों का व्याख्यान करने में समर्थ हो जाते हैं।

विशेष – यह श्लोक श्रीकृष्ण भगवान् द्वारा पूर्व में कहे गये वचनों को सिद्धान्त रूप में मानकर उद्धव जी द्वारा किये गये उसके खण्डन का प्रयास है। प्रस्तुत पद्य में उद्धव जी श्रीकृष्ण से कहते हैं कि अल्पमति पुरुष मात्र विषय का शाब्दिक बोध करने में समर्थ होता है। किन्तु किस अवसर पर शास्त्र के किस सिद्धान्त का प्रयोग होना चाहिये? यह तो श्रीकृष्ण जैसे कुशल वेत्ता ही जान सकते हैं। यहाँ दिये गये गुण, शक्ति, सिद्धि और उदय शब्द प्राचीन भारतीय राजनीति में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द हैं। समग्र प्राचीन भारतीय राजनीति इन चारों में ही समाहित है। राजनीति में सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय, द्वैधीभाव ये छः गुण कहे गये हैं, प्रभुशक्ति, मन्त्रशक्ति और उत्साहशक्ति ये तीन शक्तियाँ कही गई हैं, प्रभुसिद्धि, मन्त्रसिद्धि तथा उत्साहसिद्धि ये तीन सिद्धियाँ कही गई हैं तथा वृद्धि, क्षय और स्थान ये तीन उदय कहे गये हैं।

सन्धि –

शक्तयस्तिस्रः – शक्तयः + तिस्रः (विसर्ग सन्धि)

सिद्धयश्च – सिद्धयः + च (श्चुत्व सन्धि)

चोदयाः – च + उदयाः (गुण सन्धि)

उदयास्त्रयः – उदयाः + त्रयः (विसर्ग सन्धि)

समास –

दुर्मेधसः – दुष्टा मेधा येषां ते (बहुव्रीहि समास)

छन्द – अनुष्टुप्।

लक्षणम् – श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम्।

द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।

अनुष्टुप् छन्द के चारों चरणों में पाँचवाँ वर्ण लघु छठां वर्ण गुरु होता है। पहले और तीसरे चरण में सातवाँ वर्ण गुरु तथा दूसरे और चौथे चरण में सातवाँ वर्ण लघु होता है।

10.2.2 प्रायोगिक ज्ञान का महत्त्व

अनिर्लोडितकार्यस्य वाग्जालं वाग्मिनो वृथा।
निमित्तादपराद्धेषोर्धानुष्कस्येव वल्गितम्।। 27।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने विवेकहीन वक्ता के द्वारा दी गई मन्त्रणा को निष्फल बताया है।

अन्वयः – अनिर्लोडितकार्यस्य वाग्मिनः वाग्जालं निमित्तात् अपराद्धेषोः धानुष्कस्य वल्गितम् इव वृथा (अस्ति)।

शब्दार्थ – अनिर्लोडितकार्यस्य = विवेकपूर्वक कार्य को न समझने वाला, वाग्मिनः = वक्ता का, वाग्जालम् = वक्तव्य देना, निमित्तात् = लक्ष्य से, अपराद्धेषोः = स्खलित बाण वाला, धानुष्कस्य = धनुर्धारी, वल्गितम् = आत्मप्रशंसा, इव = की तरह, वृथा = व्यर्थ।

अनुवाद – जिसने कभी भी विवेकपूर्वक कार्यों को सम्पन्न नहीं किया, ऐसे वाक्पटु विद्वान् के वाक्जाल, उसी तरह व्यर्थ होते हैं जिस प्रकार लक्ष्य से बाण के चूक जाने पर भी किसी धनुर्धारी के द्वारा की गई आत्मप्रशंसा व्यर्थ होती है।

सन्धि –

वाग्जालम् – वाक् + जालम् (जश्त्व सन्धि)

निमित्तादपराद्ध – निमित्तात् + अपराद्ध (जश्त्व सन्धि)

धानुष्कस्येव – धानुष्कस्य + इव (गुण सन्धि)

समास –

अनिर्लोडितकार्यस्य – न निर्लोडितम्, अनिर्लोडितम् (नञ् तत्पुरुष समास),
अनिर्लोडितम् कार्यम् येन, सः, तस्य (बहुव्रीहि समास)

वाग्जालम् – वाचां जालः, वाग्जालः (तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

10.2.3 राजाओं के लिये अनिवार्य तत्त्व

सर्वकार्यशरीरेषु मुक्त्वाऽङ्गस्कन्धपञ्चकम्।
सौगतानामिवात्मान्यो नास्ति मन्त्रो महीभृताम्।। 28।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने राजनीति में केवल पंचांग के महत्त्व का वर्णन किया है।

अन्वयः – सर्वकार्यशरीरेषु अङ्गस्कन्धपञ्चकं मुक्त्वा सौगतानाम् अन्यः आत्मा इव महीभृताम् अन्यः मन्त्रः न अस्ति।

शब्दार्थ – सर्वकार्यशरीरेषु = समस्त कार्यरूपी शरीरों में, अङ्गस्कन्धपञ्चकम् = पांच विषय प्रपंचों को, मुक्त्वा = छोड़कर के, सौगतानाम् = बौद्धों के, अन्यः = दूसरा, आत्मा इव = आत्मा के समान, महीभृताम् = राजाओं के, अन्यः = दूसरा, मन्त्रः = मन्त्र, न अस्ति = नहीं होता।

अनुवाद – जिस प्रकार बौद्धों के अनुसार सभी कार्यभूत शरीरों में पांच स्कन्धों से अतिरिक्त दूसरा आत्मा नहीं होता, उसी प्रकार राजाओं के सभी कार्यों में पंचांग से अतिरिक्त कोई अन्य मन्त्र नहीं होता।

समास –

सर्वकार्यशरीरेषु – सर्वाणि च तानि कार्याणि, सर्वकार्याणि (कर्मधारय समास),
तानि शरीराणि इव (उपमित समास)।

अङ्गस्कन्धपञ्चकम् – अंगानि स्कन्धाः इव, (उपमित समास), तेषां पञ्चकम्,
अंगस्कन्धपञ्चकम् (पंचमी तत्पुरुष समास) ।

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

विशेष – यह बलराम जी की उक्ति है। बौद्ध दर्शन में समस्त संसार को कार्य माना गया है। कार्य हमेशा अनित्य होता है और कुछ समय बाद नष्ट हो जाता है। बौद्ध इस शरीर में आस्तिक दर्शनों के समान आत्मा की सत्ता नहीं मानते उनके अनुसार रूप स्कन्ध, विज्ञान स्कन्ध, वेदना स्कन्ध, संज्ञा स्कन्ध तथा संस्कार स्कन्ध नामक पांच स्कन्ध ही शरीर में विद्यमान होते हैं और उन्हीं से लोकव्यवहार चलता है। इसी प्रकार राजनीति में पांच तत्त्वों का होना आवश्यक है जिन्हें पंचांग कहा जाता है। ''कार्यों के आरम्भ का उपाय, पुरुष-द्रव्य-सम्पत, देश-काल-विभाग, विनिपात प्रतिकार, कार्यसिद्धि'' को राजनीति में पंचांग कहा गया है। यदि राजाओं के पांचों अंग अच्छी प्रकार से कार्य करते हैं तो उसके समस्त कार्य स्वयं सिद्ध हो जाते हैं। बलराम जी का आशय है कि हमारे पांचों अंग व्यवस्थित हैं इस कारण हमें शिशुपाल से युद्ध करने के लिये प्रस्थान करना चाहिये और हमारी विजय भी सुनिश्चित है। आगे के श्लोकों में भी बलराम जी शिशुपाल के वध के लिये अनेक दृष्टान्तों से उपयुक्त अवसर बताने का उपक्रम करते हैं।

10.2.4 राजनीति में गोपनीयता का महत्त्व

मन्त्रो योध इवाधीरः सर्वाङ्गैः संवृतैरपि।
चिरं न सहते स्थातुं परेभ्यो भेदशङ्कया।। 29।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि माघ ने भीरु योद्धा की तुलना गुप्त मन्त्र से की है।

अन्वयः – सर्वाङ्गैः संवृतैः अपि मन्त्रः अधीरः योधः इव परेभ्यः भेदशंकया चिरं स्थातुं न सहते।

शब्दार्थ – सर्वाङ्गैः = उपायादि अंगों के द्वारा, संवृतैः = ढके होने से, अपि = भी, मन्त्रः = विचार, अधीरः = भीरु, योधः इव = योद्धा के समान, परेभ्यः = दूसरे शत्रुओं से, भेदशंकया = जानने की शंका से, चिरम् = बहुत काल तक, स्थातुम् = स्थिरता, न सहते = सह नहीं सकता।

अनुवाद – जिस प्रकार भीरु योद्धा कवचादि के द्वारा सुरक्षित अंगों से भी शत्रुओं के भय से रणक्षेत्र में बहुत देर तक ठहर नहीं सकता। उसी प्रकार अत्यन्त गोपनीय विचार भी दूसरों के द्वारा जान लिये जाने के भय से चिरकाल तक गुप्त नहीं रह सकता। अतः मन्त्र के साथ ही कार्य किया जाना चाहिये। अर्थात् मन्त्र (गुप्त विचार) को अधिक लोगों से नहीं कहना चाहिये।

सन्धि –

इवाधीरः – इव + अधीरः (दीर्घ सन्धि)

संवृतैरपि – संवृतैः + अपि (विसर्ग सन्धि)

समास –

सर्वाङ्गैः – सर्वाणि च तानि अंगानि, सर्वांगानि, तैः (कर्मधारय समास)

अधीरः – न धीरः इति अधीरः (नञ् तत्पुरुष समास)

भेदशङ्कया – भेदस्य शंका इति भेदशंका, तया, (तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

आत्मोदयः परज्यानिर्द्वयं नीतिरितीयती।
तदूरीकृत्य कृतिभिर्वाचस्पत्यं प्रतायते।। 30।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि माघ ने शत्रु शिशुपाल पर आक्रमण का यह उचित अवसर है, इस तथ्य को नीति द्वारा समर्थित किया है।

अन्वयः – आत्मोदयः परज्यानिः इति द्वयम् इयती नीतिः। तत् ऊरीकृत्य कृतिभिः वाचस्पत्यं प्रतायते।

शब्दार्थ – आत्मोदयः = अपनी उन्नति, परज्यानिः = शत्रु की हानि, इति = इस प्रकार, द्वयम् = दो, इयती = यही, नीतिः = राजनीति है, तत् = उस दोनों नीति को, ऊरीकृत्य = स्वीकार करके, कृतिभिः = कुशल विद्वानों द्वारा, वाचस्पत्यम् = विद्वत्ता का, प्रतायते = प्रदर्शन कहा जाता है।

अनुवाद – अपनी उन्नति और अपने शत्रु की पराजय, ये दो ही राजनीति के तत्त्व हैं। इन दोनों को लक्ष्य करके ही राजनीति में कुशल विद्वानों द्वारा अपने वैदुष्य का प्रदर्शन किया जाता है। अर्थात् विद्वानों द्वारा राजनीति के विषय में अपने-अपने पक्षों की स्थापना की जाती है।

सन्धि –

आत्मोदयः – आत्मा + उदयः (गुण सन्धि)

नीतिरिति – नीतिः + इति (विसर्ग सन्धि)

कृतिभिर्वाचस्पत्यम् – कृतिभिः + वाचस्पत्यम् (विसर्ग सन्धि)

समास –

आत्मोदयः – आत्मनः उदयः इति आत्मोदयः (षष्ठी तत्पुरुष समास)

परज्यानि – परस्य ज्यानि, परज्यानि (षष्ठी तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

10.2.5 वैभव सम्पन्न व्यक्ति के कर्त्तव्य

तृप्तियोगः परेणापि महिम्ना न महात्मनाम्।
पूर्णश्चन्द्रोदयाकाङ्क्षी दृष्टान्तोऽत्र महार्णवः।। 31।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में कवि ने ऐश्वर्य सम्पन्न व्यक्ति को भी अपनी समृद्धि को निरन्तर बढ़ाते रहने का परामर्श दिया है।

अन्वयः – महीयसां परेण अपि महिम्ना तृप्तियोगः न। अत्र पूर्णः चन्द्रोदयाकाङ्क्षी महार्णवः दृष्टान्तः (अस्ति)।

शब्दार्थ – महीयसाम् = परम वैभवशाली के, परेण अपि = अत्यधिक भी, महिम्ना = वैभव से, तृप्तियोगः = संतोष प्राप्ति, न = नहीं होती। अत्र = इस विषय में, पूर्णः = समृद्ध, चन्द्रोदयाकाङ्क्षी = चन्द्रमा के उदय की आकांक्षा करने वाला, महार्णवः = महान् समुद्र, दृष्टान्तः = उदाहरण है।

अनुवाद – जिस प्रकार जल से पूर्ण समुद्र अपनी वृद्धि के लिये चन्द्रमा के उदय की आकांक्षा करता है। उसी प्रकार परम वैभवशाली व्यक्ति भी अत्यधिक वैभव सम्पन्न होने पर भी सन्तुष्ट नहीं होता अपितु निरन्तर वृद्धि की कामना करता रहता है।

सन्धि –

परेणापि – परेण + अपि (दीर्घ सन्धि)

चन्द्रोदय – चन्द्र + उदय (गुण सन्धि)

उदयाकांक्षी – उदय + आकांक्षी (दीर्घ सन्धि)

समास –

तृप्तियोगः – तृप्तेः योगः इति (तत्पुरुष समास)

चन्द्रोदयः – चन्द्रस्य उदयः इति (षष्ठी तत्पुरुष समास)

महार्णवः – महान्ति अर्णांसी (जलानि) यत्र, महार्णवः, (बहुव्रीहि समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

सम्पदा सुस्थिरम्मन्यो भवति स्वल्पयाऽपि यः।
कृतकृत्यो विधिर्मन्ये न वर्धयति तस्य ताम्।। 32।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि ने बताया है कि अपनी समृद्धि से सन्तुष्ट व्यक्ति की समृद्धि की वृद्धि के लिये ब्रह्मा भी उसकी सहायता नहीं कर सकते।

अन्वयः – यः स्वल्पया अपि सम्पदा सुस्थिरम्मन्यः भवति, कृतकृत्यः विधिः तस्य तां न वर्धयति–इति मन्ये।

शब्दार्थ – यः = जो व्यक्ति, स्वल्पया अपि = थोड़ी से भी, सम्पदा = सम्पदा से, सुस्थिरम्मन्यः = अपने को सन्तुष्ट मानता, भवति = है, कृतकृत्यः = अपने कार्य को करने वाला, विधिः = ब्रह्मा, तस्य = उस व्यक्ति के, तां = सम्पदा को, न वर्धयति = नहीं बढ़ाता।

अनुवाद – जो प्राणी अपनी अल्प समृद्धि से सन्तुष्ट होकर उसकी वृद्धि के लिये प्रयत्न नहीं करता है, स्वयं ब्रह्मा भी उसके सम्बन्ध में अपने को सन्तुष्ट मानकर के उसकी वृद्धि के लिये विचार नहीं करते।

सन्धि –

स्वल्पयापि – स्वल्पया + अपि (दीर्घ सन्धि)

विधिर्मन्ये – विधिः + मन्ये (विसर्ग सन्धि)

समास –

कृतकृत्य – कृतम् कृत्यम् येन सः कृतकृत्यः (बहुव्रीहि समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

10.2.6 शत्रु के सम्पूर्ण विनाश की मन्त्रणा

समूलघातमघ्नन्तः परान्नोद्यन्ति मानिनः।
प्रध्वंसितान्धतमसस्तत्रोदाहरणं रविः।। 33।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने कल्याण के लिये शत्रु के सम्पूर्ण विनाश की मन्त्रणा दी है।

अन्वयः – मानिनः परान् समूलघातम् अघ्नन्तः न उद्यन्ति। तत्र प्रध्वंसितान्धतमसः रविः उदाहरणम् (वर्तते)।

शब्दार्थ – मानिनः = स्वाभिमानी, परान् = शत्रुओं को, समूलघातम् = समूल नाश, अघ्नन्तः = न करते हुये, न उद्यन्ति = अभ्युदय को प्राप्त नहीं करते। तत्र = इस विषय में, प्रध्वंसितान्धतमसः = सम्पूर्ण अन्धकार को नष्ट करने वाला, रविः = सूर्य, उदाहरणम् = दृष्टान्त है।

अनुवाद – स्वाभिमानी व्यक्ति शत्रु का सम्पूर्ण विनाश करके ही अभ्युदय को प्राप्त होता है। जैसे सूर्य उदय के पूर्व अन्धकार को पूर्ण रूप से नष्ट करके ही आकाश में उदित होता है अर्थात् समृद्धि को प्राप्त होता है।

सन्धि –

नोद्यन्ति – न + उद्यन्ति (गुण सन्धि)

तत्रोदाहरणम् – तत्र + उदाहरणम् (गुण सन्धि)

समास –

प्रध्वंसितान्धतमसः– प्रध्वंसितम् अन्धतमसं येन सः (बहुव्रीहि समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा।
अनीत्वा पङ्कतां धूलिमुदकं नावतिष्ठते।। 34।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में भी महाकवि माघ ने शत्रुओं के सम्पूर्ण नाश को ही प्रतिष्ठा का मूलमन्त्र बताया है।

अन्वयः – विपक्षम् अखिलीकृत्य प्रतिष्ठा दुर्लभा खलु। उदकं धूलिं पङ्कताम् अनीत्वा न अवतिष्ठते।

शब्दार्थ – विपक्षम् = शत्रु को, अखिलीकृत्य = सम्पूर्ण विनाश के बिना, प्रतिष्ठा = ख्याति, दुर्लभा खलु = निश्चित रूप से दुष्प्राप्य है। उदकम् = जल, धूलिम् = धूलि को, पङ्कताम् = कीचड़, अनीत्वा = न बनाकर, न अवतिष्ठते = नहीं स्थिर होता।

अनुवाद – जब तक शत्रुओं का सम्पूर्ण विनाश नहीं होता तब तक कोई भी व्यक्ति अपने को स्थिर नहीं कर सकता। जैसे जल अपने ऊपर विद्यमान धूलि को कीचड़ बनाये बिना स्थिरता को प्राप्त नहीं होता।

सन्धि –

नावतिष्ठते – न + अवतिष्ठते (दीर्घ सन्धि)

समास –

विपक्षम् – विरुद्धः पक्षः यस्य सः विपक्षः, तम् (बहुव्रीहि समास)

अखिलीकृत्य – न खिलम् इति अखिलम् (नञ् तत्पुरुष समास), अखिलम् खिलम् कृत्वा इति अखिलीकृत्य।

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

ध्रियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत्कुतः सुखम्।
पुरः क्लिश्नाति सोमं हि सैंहिकेयोऽसुरद्रुहाम्।। 35।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में कवि कहता है कि जब तक एक भी शत्रु अवशिष्ट है तब तक सुख नहीं मिल सकता।

अन्वयः – एकः अपि रिपुः यावत् ध्रियते, तावत् सुखं कुतः ? सैंहिकेयः असुरद्रुहां पुरः सोमं क्लिश्नाति हि।

शब्दार्थ – एकः अपि रिपुः = एक भी शत्रु, यावत् = जब तक, ध्रियते = विद्यमान है, तावत् = तब तक, सुखं = सुख, कुतः = कैसे ?, सैंहिकेयः = सिंहिका का पुत्र राहु, असुरद्रुहाम् = असुरों से द्रोह करने वाले देवताओं के, पुरः = सामने, सोमम् = चन्द्रमा, क्लिश्नाति हि = दुःखित करता है।

अनुवाद – जब तक किसी व्यक्ति का एक भी शत्रु जीवित रहता है तब तक उसे सुख की प्राप्ति नहीं होती। जैसे सिंहिका का पुत्र राहु असुरों से द्रोह करने वाले देवताओं के सामने चन्द्रमा को दुःखित करता है।

सन्धि –

एकोऽपि – एकः + अपि (विसर्ग सन्धि)

समास –

असुरद्रुहाम् – असुरं द्रुहयति, असुरद्रुह, तेषाम् (उपपद समास)।

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

10.2.7 शत्रु और मित्र के प्रकार

सखा गरीयान् शत्रुश्च कृत्रिमस्तौ हि कार्यतः।
स्याताममित्रौ मित्रे च सहजप्राकृतावपि।। 36।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि माघ ने शत्रु और मित्र का महत्त्व निरूपित किया है।

अन्वयः – कृत्रिमः सखा शत्रुश्च गरीयान्। हि तौ कार्यतः। सहजप्राकृतौ अपि अमित्रौ मित्रे च स्याताम्।

शब्दार्थ – कृत्रिमः = कार्य से होने वाला, सखा = मित्र, शत्रुश्च = शत्रु, गरीयान् = श्रेष्ठ है। हि = क्योंकि, तौ = वे दोनों मित्र एवं शत्रु, कार्यतः = कार्य से, सहजप्राकृतौ = सहज और प्राकृत, अपि = भी, अमित्रौ = शत्रु, मित्रे = मित्र, च स्याताम् = हो जाते हैं।

अनुवाद – अपने कार्य को सिद्ध करने के लिये समय-समय पर होने वाले कृत्रिम शत्रु और मित्र महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसके अतिरिक्त सहज और प्राकृत शत्रु और मित्र होते हैं। इस प्रकार दोनों ही प्रकार के शत्रु और मित्र महत्त्वपूर्ण होते हैं।

सन्धि –

कृत्रिमस्तौ – कृत्रिमः + तौ (विसर्ग सन्धि)

प्राकृतावपि – प्राकृतौ + अपि (अयादि सन्धि)

समास –

सहजप्राकृतौ– सहजश्च प्राकृतश्च सहजप्राकृतौ, तौ (द्वन्द्व समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

विशेष – राजनीति में तीन प्रकार के शत्रु तथा तीन प्रकार के मित्र माने गये हैं। तीन प्रकार के मित्र हैं – 1. कृत्रिम मित्र, 2. सहज मित्र तथा 3. प्राकृत मित्र। किसी कार्य से मित्र बनने वाला कृत्रिम मित्र कहलाता है। पूर्व सम्बन्धों के आधार पर होने वाला मित्र सहज मित्र कहलाता है तथा राज्य की सीमा से लगे हुये पड़ोसी राज्य का राजा प्राकृत मित्र कहलाता है। इसी प्रकार शत्रुओं के भी तीन भेद हैं – 1. कृत्रिम शत्रु, 2. सहज शत्रु तथा 3. प्राकृत शत्रु। अपने विचारों एवं विरुद्ध व्यवहार से शत्रुता रखने वाला कृत्रिम शत्रु है। पारिवारिक सम्बन्धों के आधार पर शत्रु बनने वाला सहज शत्रु कहलाता है तथा राज्य की सीमा से लगे हुये राज्य का राजा प्राकृत शत्रु कहलाता है।

उपकर्त्राऽरिणा सन्धिर्न मित्रेणापकारिणा।
उपकारापकारौ हि लक्ष्यं लक्षणमेतयोः।। 37।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने शत्रु और मित्र का स्वरूप बताया है।

अन्वयः – उपकर्त्रा अरिणा (अपि) सन्धिः (कार्यः), अपकारिणा मित्रेण (अपि सन्धिः) न (कार्यः)। हि उपकारापकारौ एतयोः लक्षणं लक्ष्यम्।

शब्दार्थ – उपकर्त्रा = उपकार करने वाले, अरिणा = शत्रु से, सन्धिः = सम्बन्ध कर लेना चाहिये, अपकारिणा = अपकार करने वाले, मित्रेण = मित्र से, न = नहीं करना चाहिये। हि = क्योंकि, उपकारापकारौ = उपकार करने वाला मित्र और अपकार करने वाला शत्रु, एतयोः = यही शत्रु और मित्र का, लक्षणम् = पहचान, लक्ष्यम् = कहा गया है।

अनुवाद – हित करने वाले शत्रु से भी सम्बन्ध बना लेना चाहिये तथा अपकार करने वाले मित्र से भी सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। क्योंकि आचार्यों ने उपकार करने वाले को मित्र और अपकार करने वाले को शत्रु बताया है।

सन्धि –

मित्रेणापकारिणा – मित्रेण + अपकारिणा (दीर्घ सन्धि)

उपकारापकारौ – उपकार + अपकारौ (दीर्घ सन्धि)

समास –

उपकारापकारौ – उपकारश्च अपकारश्च, उपकारापकारौ (द्वन्द्व समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

बोध प्रश्न

1. राजनीति में गुण, शक्ति, सिद्धि और उदय कितने प्रकार के कहे गये हैं ?
2. बौद्धों के पाँच स्कन्ध कौन से हैं ?
3. राजनीति का मूल तत्त्व क्या है ?
4. परम वैभवशाली को क्या करना चाहिये ?
5. शत्रुओं के कितने भेद हैं ?
6. प्रकृतावपि पद का सन्धि-विच्छेद लिखिये।

अभ्यास प्रश्न

1. विवेकपूर्वक कार्य को न करने वाले की युक्तियाँ कैसी होती हैं ?
2. 'समूलघातमघ्नन्तः.....' श्लोक की व्याख्या कीजिए।
3. कवचादि से युक्त योद्धा का वर्णन किस प्रकार किया गया है ?
4. माघ ने शत्रु और मित्र के विषय में क्या मन्त्रणा दी है ?

10.3 सारांश

महाकवि माघ ने उपर्युक्त श्लोकों में राजनीति के तत्त्वों तथा नीतियों का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया है कि अल्पबुद्धि लोग भी (नीतिशास्त्र आदि) ग्रन्थों का अध्ययन करके यह बता सकते हैं कि गुण छः होते हैं, शक्तियाँ तीन होती हैं, सिद्धियाँ तीन होती हैं तथा उदय भी तीन प्रकार के होते हैं। किन्तु ग्रन्थ मात्र का अध्ययन करके कोई भी व्यक्ति इनके रहस्य को नहीं जान सकता। जिसने कभी भी विवेकपूर्वक कार्यों को सम्पन्न नहीं किया, ऐसे वाक्पटु विद्वान् के वाग्जाल, उसी तरह व्यर्थ होते हैं जिस प्रकार लक्ष्य से बाण के चूक जाने पर भी किसी धनुर्धारी के द्वारा की गई आत्मप्रशंसा व्यर्थ होती है। अतः कार्यों के माध्यम से नीति का अभ्यास करने वाला व्यक्ति ही विश्वास के योग्य होता है। उन्होंने यह भी कहा है कि जिस प्रकार बौद्धों के अनुसार सभी कार्यभूत शरीरों में पांच स्कन्धों से अतिरिक्त दूसरा आत्मा नहीं होता, उसी प्रकार राजाओं के सभी कार्यों में पांच अंगों से अतिरिक्त कोई अन्य मन्त्र नहीं होता। राजनीति में पंचांग का अत्यन्त महत्त्व है। पंचांग से रहित राजा किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। माघ राजनीति में मन्त्र का भी अत्यधिक महत्त्व प्रतिपादित करते हैं। उनका कहना है कि जिस प्रकार भीरु योद्धा कवचादि के द्वारा सुरक्षित अंगों से भी शत्रुओं के भय से रणक्षेत्र में बहुत देर तक ठहर नहीं सकता। उसी प्रकार अत्यन्त गोपनीय विचार भी दूसरों के द्वारा जान लिये जाने के भय से चिरकाल तक गुप्त नहीं रह सकता। अतः मन्त्र के साथ ही कार्य किया जाना चाहिये। अर्थात् मन्त्र (गुप्त विचार) को अधिक लोगों से नहीं कहना चाहिये। माघ ने अपनी उन्नति और अपने शत्रु की पराजय को ही राजनीति का तत्त्व बताया है। इन दोनों को लक्ष्य करके

ही राजनीति में कुशल विद्वानों द्वारा अपने वैदुष्य का प्रदर्शन किया जाता है अर्थात् विद्वानों द्वारा राजनीति के विषय में अपने-अपने पक्षों की स्थापना की जाती है। जिस प्रकार जल से पूर्ण समुद्र अपनी वृद्धि के लिये चन्द्रमा के उदय की आकांक्षा करता है उसी प्रकार परम वैभवशाली व्यक्ति भी अत्यधिक वैभव सम्पन्न होने पर भी सन्तुष्ट नहीं होता अपितु निरन्तर वृद्धि की कामना करता रहता है। जो प्राणी अपनी अल्प समृद्धि से सन्तुष्ट होकर उसकी वृद्धि के लिये प्रयत्न नहीं करता है, स्वयं ब्रह्मा भी उसके सम्बन्ध में अपने को सन्तुष्ट मानकर के उसकी वृद्धि के लिये विचार नहीं करते।

स्वाभिमानी व्यक्ति शत्रु का सम्पूर्ण विनाश करके ही अभ्युदय को प्राप्त होता है। जैसे सूर्य उदय के पूर्व अन्धकार को पूर्ण रूप से नष्ट करके ही आकाश में उदित होता है। अर्थात् समृद्धि को प्राप्त होता है। इस प्रकार राजनीति में शत्रु का विनाश परम आवश्यक माना गया है। जब तक शत्रुओं का सम्पूर्ण विनाश नहीं होता तब तक कोई भी व्यक्ति अपने को स्थिर नहीं कर सकता। जैसे जल अपने ऊपर विद्यमान धूलि को कीचड़ बनाये बिना स्थिरता को प्राप्त नहीं होता। धूलिराशि कीचड़ बनकर जल के अन्तःस्थल में चली जाती है और उसे मलिन नहीं करती। जब तक किसी व्यक्ति का एक भी शत्रु जीवित रहता है तब तक उसे सुख की प्राप्ति नहीं होती। जैसे सिंहिका का पुत्र राहु असुरों से द्रोह करने वाले देवताओं के सामने चन्द्रमा को दुःखित करता है। अपने कार्य को सिद्ध करने के लिये समय-समय पर होने वाले कृत्रिम शत्रु और मित्र महत्त्वपूर्ण होते हैं। इसके अतिरिक्त सहज और प्राकृत शत्रु और मित्र होते हैं। इस प्रकार दोनों ही प्रकार के शत्रु और मित्र महत्त्वपूर्ण होते हैं। माघ की मन्त्रणा है कि हित करने वाले शत्रु से भी सम्बन्ध बना लेना चाहिये तथा अपकार करने वाले मित्र से भी सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। क्योंकि आचार्यों ने उपकार करने वाले को मित्र और अपकार करने वाले को शत्रु बताया है।

इस प्रकार आपने उपर्युक्त श्लोकों में महाकवि माघ के द्वारा प्रतिपादित राजनीतिक तत्त्वों के व्याज से प्राचीन भारतीय राजनीति के कुछ विषयों का अध्ययन किया। यह प्राचीन भारतीय राजनीति आज भी उतनी ही उपयोगी है।

10.4 शब्दावली

दुर्मेधसः = अल्पबुद्धि लोग

व्याकर्तुम् = व्याख्या करने में

अनिर्लोडितकार्यस्य = विवेकपूर्वक कार्य को न समझने वाला

अपराद्धेषोः = स्खलित बाण वाला

धानुष्कस्य = धनुर्धारी

संवृतैः = ढके होने से

अधीरः = भीरु

भेदशंकया = जानने की शंका से

आत्मोदयः = अपनी उन्नति

परज्यानिः = शत्रु की हानि

महार्णवः = महान् समुद्र

कृतकृत्यः = अपने कार्य को करने वाला

प्रध्वंसितान्धतमसः	=	सम्पूर्ण अन्धकार को नष्ट करने वाला
पङ्कताम्	=	कीचड़
सैंहिकेयः	=	सिंहिका का पुत्र राहु
क्लिश्नाति हि	=	दुःखित करता है
सहजप्राकृतौ	=	सहज और प्राकृत
उपकर्त्रा	=	उपकार करने वाले

10.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. 'शिशुपालवधम्', डॉ. रामकुमार आचार्य, चौखम्बा पब्लिशर्स, गोकुल भवन, के–37/109, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी, 2000।
2. शिशुपालवधम्, श्री पण्डित हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, के 37/117, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी, 1984 ।
3. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, संस्कृत संस्थान, नया हैदराबाद, लखनऊ, 1997 ।
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009।
5. अमरकोश, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहर नगर, बंगलो रोड़, दिल्ली, 2011।
6. वृत्तरत्नाकरः, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2011।

10.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. राजनीति में छः गुण, तीन शक्तियाँ, तीन सिद्धियाँ और तीन प्रकार के उदय कहे गये हैं।
2. रूप स्कन्ध, विज्ञान स्कन्ध, वेदना स्कन्ध, संज्ञा सकन्ध तथा संस्कार स्कन्ध बौद्धों के पाँच स्कन्ध हैं।
3. अपनी उन्नति और अपने शत्रु की पराजय, ये दो ही राजनीति के मूल तत्त्व हैं।
4. परम वैभवशाली व्यक्ति को भी निरन्तर वृद्धि की कामना करते रहना चाहिये।
5. शत्रुओं के भी तीन भेद हैं – (1) कृत्रिम शत्रु (2) सहज शत्रु (3) प्राकृत शत्रु
6. प्रकृतौ+अपि (अयादि सन्धि)

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 11 शिशुपालवधम् (द्वितीय सर्ग) श्लोक 42-56

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 काव्यांश की व्याख्या

- 11.2.1 शत्रु की उपेक्षा का निषेध
- 11.2.2 अपराधी को क्षमादान का निषेध
- 11.2.3 अपमानपूर्ण जीवन से जन्म न होना ही श्रेष्ठ
- 11.2.4 शत्रु के सिर पर चढ़ने के कारण धूलि की श्रेष्ठता
- 11.2.5 जन्म का वास्तविक फल
- 11.2.6 स्वाभिमानी व्यक्ति की श्रेष्ठता
- 11.2.7 सरलता का दुष्परिणाम
- 11.2.8 बलहीन पुरुष का लक्षण
- 11.2.9 तेजस्वी व्यक्ति की विशेषता
- 11.2.10 कीर्ति के लिये शत्रुओं का मर्दन
- 11.2.11 वीरता की श्रेष्ठता
- 11.2.12 दण्ड-प्रयोग की श्रेष्ठता
- 11.2.13 शिशुपाल से सन्धि का निषेध
- 11.2.14 राज्य का अहित करने वाले मन्त्रियों का परित्याग

11.3 सारांश

11.4 शब्दावली

11.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप –

- महाकवि माघ के काव्य का वैशिष्ट्य जान सकेंगे।
- शत्रु के प्रति कभी उदासीन नहीं होना चाहिये, यह जान सकेंगे।
- अपराधी को बार-बार क्षमा नहीं करना चाहिये, यह भी जान सकेंगे।
- अपराधी होने पर अपना सम्बन्धी भी दण्डनीय है, इस उक्ति का समर्थन पा सकेंगे।
- माघ के राजनीतिक एवं शास्त्रीय वैदुष्य का परिचय पा सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

पूर्व इकाई में आपने शिशुपालवध के द्वितीय सर्ग के 26-37 श्लोकों का अध्ययन किया और जाना कि महाकवि माघ ने उन श्लोकों में राजनीति के तत्त्वों तथा नीतियों का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया है कि अल्पबुद्धि लोग भी (नीतिशास्त्र आदि) ग्रन्थों का अध्ययन करके यह बता सकते हैं कि गुण छः होते हैं, शक्तियाँ तीन होती हैं, सिद्धियाँ तीन होती हैं तथा उदय भी तीन प्रकार के होते हैं। किन्तु ग्रन्थ मात्र का अध्ययन करके कोई भी व्यक्ति इनके रहस्य को नहीं जान सकता। जिसने कभी भी विवेकपूर्वक कार्यों को सम्पन्न नहीं किया, ऐसे वाक्पटु विद्वान् के वाग्जाल, उसी तरह व्यर्थ होते हैं जिस प्रकार लक्ष्य से बाण के चूक जाने पर भी किसी धनुर्धारी के द्वारा की गई आत्मप्रशंसा व्यर्थ होती है। अतः कार्यों के माध्यम से नीति का अभ्यास करने वाला व्यक्ति ही विश्वास के योग्य होता है। आपने यह भी पढ़ा है कि जिस प्रकार बौद्धों के अनुसार सभी कार्यभूत शरीरों में पांच स्कन्धों से अतिरिक्त दूसरा आत्मा नहीं होता, उसी प्रकार राजाओं के सभी कार्यों में पांच अंगों से अतिरिक्त कोई अन्य मन्त्र नहीं होता। राजनीति में पंचांग का अत्यन्त महत्त्व है। पंचांग से रहित राजा किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। आप जानते हैं कि माघ राजनीति में मन्त्र का भी अत्यधिक महत्त्व प्रतिपादित करते हैं। महाकवि माघ का कहना है कि जिस प्रकार भीरु योद्धा कवचादि के द्वारा सुरक्षित अंगों से भी शत्रुओं के भय से रणक्षेत्र में बहुत देर तक ठहर नहीं सकता उसी प्रकार अत्यन्त गोपनीय विचार भी दूसरों के द्वारा जान लिये जाने के भय से चिरकाल तक गुप्त नहीं रह सकता। अतः मन्त्र के साथ ही कार्य किया जाना चाहिये। अर्थात् मन्त्र (गुप्त विचार) को अधिक लोगों से नहीं कहना चाहिये। माघ ने अपनी उन्नति और अपने शत्रु की पराजय को ही राजनीति का तत्त्व बताया है। इन दोनों को लक्ष्य करके ही राजनीति में कुशल विद्वानों द्वारा अपने वैदुष्य का प्रदर्शन किया जाता है। अर्थात् विद्वानों द्वारा राजनीति के विषय में अपने-अपने पक्षों की स्थापना की जाती है। जिस प्रकार जल से पूर्ण समुद्र अपनी वृद्धि के लिये चन्द्रमा के उदय की आकांक्षा करता है उसी प्रकार परम वैभवशाली व्यक्ति भी अत्यधिक वैभव सम्पन्न होने पर भी सन्तुष्ट नहीं होता अपितु निरन्तर वृद्धि की कामना करता रहता है। जो प्राणी अपनी अल्प समृद्धि से सन्तुष्ट होकर उसकी वृद्धि के लिये प्रयत्न नहीं करता है, स्वयं ब्रह्मा भी उसके सम्बन्ध में अपने को सन्तुष्ट मानकर के उसकी वृद्धि के लिये विचार नहीं करते।

इस इकाई में आप शिशुपालवध के द्वितीय सर्ग के 42-56 श्लोकों का अध्ययन करेंगे। इन श्लोकों में महाकवि माघ ने बलराम के मुख से यह प्रतिपादित कराया है कि जो व्यक्ति क्रोधित शत्रु के साथ विरोध तो करता है किन्तु उसके प्रति उदासीन हो जाता है वह घास के ढेर में जलती हुई आग को डालकर हवा की अनुकूल दिशा में सोता है। अभिप्राय यह है कि घास के ढेर में जलती हुई आग को डालकर हवा की अनुकूल दिशा में सोने वाला व्यक्ति स्वयं जलकर मर जाता है उसी प्रकार क्रुद्ध शत्रु के साथ विरोध का भाव जगाकर उसकी उपेक्षा करने वाला व्यक्ति मारा जाता है। बलराम इस प्रसंग में यह भी कहते हैं कि यद्यपि शिशुपाल हमारी बुआ का पुत्र होने के कारण हमारा बन्धु है तथापि वह क्षमा के योग्य नहीं है। क्षमाशील व्यक्ति स्वल्प या एक-दो बार किये गये अपराध को भले क्षमा कर दे किन्तु विरोध की भावना से बार-बार अपराध करने वाले व्यक्ति को कोई क्षमा नहीं कर सकता। इस प्रसंग में बलराम अनेक तथ्यों के द्वारा श्रीकृष्ण को शिशुपाल का वध करने के लिये प्रेरित करते हैं तथा लौकिक और शास्त्रीय दृष्टान्तों से अपने कथन को पुष्ट करते हैं।

इस इकाई में आप बलराम जी की इन्हीं उक्तियों का अध्ययन करेंगे तथा महाकवि माघ के प्रतिपादन के वैशिष्ट्य एवं जीवन में इस महाकाव्य की उपयोगिता का परिचय पा सकेंगे।

11.2 काव्यांश की व्याख्या

11.2.1 शत्रु की उपेक्षा का निषेध

विधाय वैरं सामर्षे नरोऽरौ य उदासते।
प्रक्षिप्योदर्चिषं कक्षे शेरते तेऽभिमारुतम्।। 42।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने शत्रु की उपेक्षा को निषिद्ध बताया है।

अन्वयः – ये नरः सामर्षे अरौ वैरं विधाय उदासते, ते कक्षे उदर्चिषम् प्रक्षिप्य अभिमारुतं शेरते।

शब्दार्थ – ये = जो, नरः = मनुष्य, सामर्षे = क्रोधित, अरौ = शत्रु, वैरं = शत्रुता, विधाय = करके, उदासते = उदासीन हो जाता है, ते = वह पुरुष, कक्षे = झाड़ी में (सूखी लकड़ी के ढेर में), उदर्चिषम् = अग्नि को, प्रक्षिप्य = रखकर के, अभिमारुतम् = वायु के सम्मुख, शेरते = सोता है।

अनुवाद – जो मनुष्य शत्रु को अपमानित करके उसके विषय में निश्चिन्त हो जाता है वह उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जिस प्रकार सूखी लकड़ी में आग लगाकर वायु की अनुकूल दिशा में लेट जाने वाला व्यक्ति नष्ट हो जाता है। अर्थात् शत्रु को भड़काकर उदासीन रहने वाला व्यक्ति शीघ्र नष्ट हो जाता है।

सन्धि –

प्रक्षिप्योदर्चिषम् – प्रक्षिप्य + उदर्चिषम् (गुण सन्धि)

समास –

सामर्षे – अमर्षेण सहितः सामर्षः, तस्मिन् सामर्षे (प्रादि तत्पुरुष समास)

उदर्चिषम् – उद्गतानि अर्चीषि यस्य सः तम् (बहुव्रीहि समास)

अभिमारुतम् – मारुतम् अभिलक्ष्य (अव्ययीभाव समास)

छन्द – अनुष्टुप्।

लक्षणम् – श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।

अनुष्टुप् छन्द के चारों चरणों में पाँचवां वर्ण लघु छठां वर्ण गुरु होता है। पहले और तीसरे चरण में सातवां वर्ण गुरु तथा दूसरे और चौथे चरण में सातवां वर्ण लघु होता है।

11.2.2 अपराधी को क्षमादान का निषेध

मनागनभ्यावृत्त्या वा कामं क्षाम्यतु यः क्षमी।
क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः।। 43।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने कहा है कि बार-बार अपराध करने वाले को क्षमा करने में कोई भी समर्थ नहीं होता।

अन्वयः – यः क्षमी (सः) मनाक् अनभ्यावृत्त्या वा (विराध्यन्तम्) कामं क्षाम्यतु। क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं कः क्षमेत।

शब्दार्थ – यः क्षमी = जो सहनशील, मनाक् = थोड़ा भी, अनभ्यावृत्त्या = एक बार, वा = अथवा बार-बार, कामम् = अत्यन्त, क्षाम्यतु = क्षमा करे। क्रियासमभिहारेण = बार-बार करने से, विराध्यन्तम् = अपकार करने वाले को, कः क्षमेत = कौन क्षमा कर सकता है।

अनुवाद – सहनशील व्यक्ति स्वल्प और एक बार के अपराध को यथेच्छ क्षमा कर सकता है। परन्तु बार-बार अपराध करने वाले शत्रु को कौन क्षमा करने में समर्थ है ? अर्थात् कोई क्षमा नहीं कर सकता।

सन्धि –

मनागनभ्यावृत्त्या – मनाक् + अनभ्यावृत्त्या (जश्त्व सन्धि)

समास –

अनभ्यावृत्त्या – न अभ्यावृत्ति, अनभ्यावृत्ति, तया (नञ् तत्पुरुष समास)

क्रियासमभिहारेण – क्रियायाः समभिहाराः, तेन (षष्ठी तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

अन्यदा भूषणं पुंसः क्षमा लज्जेव योषितः।
पराक्रमः परिभवे वैयात्यं सुरतेष्विव।। 44।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने कहा है कि क्षमा सदैव अलंकार नहीं होती।

अन्वयः – अन्यदा योषितः लज्जा इव पुंसः (अन्यदा) क्षमा भूषणम्। (योषितः) सुरतेषु वैयात्यम् इव (पुंसः) परिभवे पराक्रमः भूषणम् (भवति)।

शब्दार्थ – अन्यदा = अन्य काल में (सुरत से अतिरिक्त समय में), योषितः = स्त्री की, लज्जा = लज्जा, इव = समान, पुंसः = पुरुष का, क्षमा = क्षमा, भूषणम् = अलंकार है। सुरतेषु = रमणकाल में, वैयात्यम् इव = धृष्टता के समान, परिभवे = अपमान में, पराक्रमः = बल ही, भूषणम् = अलंकार है।

अनुवाद – जैसे रति के अतिरिक्त समय में ही लज्जा स्त्रियों का आभूषण होती है। रति के समय में धृष्टता ही रति को अलंकृत करती है। इसी प्रकार साधारण परिस्थिति में क्षमा पुरुष का गुण होता है। परन्तु अपमान के समय में वीरता ही उसका गुण होता है।

सन्धि –

सुरतेष्विव – सुरतेषु + इव (यण् सन्धि)

लज्जेव – लज्जा + इव (गुण सन्धि)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.3 अपमानपूर्ण जीवन से जन्म न होना ही श्रेष्ठ

मा जीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति।
तस्याजननिरेवास्तु जननीक्लेशकारिणः।। 45।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि माघ ने अपमानित होकर भी निन्दित जीवन व्यतीत करने वाले पुरुष के जीवन को व्यर्थ कहा है।

अन्वयः – यः परावज्ञादुःखदग्धः अपि मा जीवन् (सन्) जीवति, जननीक्लेशकारिणः तस्य अजननिः एव अस्तु।

शब्दार्थ – यः = जो पुरुष, परावज्ञादुःखदग्धः = दूसरे के अपमान से उत्पन्न दुःखरूपी अग्नि से, अपि = भी, मा जीवन् = निन्दनीय जीवन, जीवति = जीता है, जननीक्लेशकारिणः = माता को दुःख देने वाला, तस्य = उस पुरुष का, अजननिः एव = जन्म का न होना ही, अस्तु = ठीक है।

अनुवाद– दूसरे के अपमान के दुःख से दुःखित भी जो व्यक्ति निन्दित जीवन बिताता है वह अपनी माता को व्यर्थ ही गर्भ धारण से उत्पन्न प्रसव वेदना को देता है अर्थात् उसका जन्म लेना व्यर्थ है।

सन्धि –

जननिरेवास्तु – जननिः + एव (विसर्ग सन्धि) + अस्तु (दीर्घ सन्धि)

दुःखदग्धोऽपि – दुःखदग्धः + अपि (विसर्ग सन्धि)

समास –

परावज्ञादुःखदग्धः – परस्य अवज्ञा इति परावज्ञा तया परावज्ञया दुःखम् इति परावज्ञादुःख, तेन दग्धः (तत्पुरुष समास)

जननीक्लेशकारिणः – जनन्याः क्लेशकारी इति जननीक्लेशकारी, तस्य (तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.4 शत्रु के सिर पर चढ़ने के कारण धूलि की श्रेष्ठता

पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः।। 46।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में माघ ने स्वाभिमानी पुरुष को अपमान का बदला लेने के लिए प्रेरित किया है।

अन्वयः – यत् (रजः) पादाहतम् (सत्) उत्थाय (आहन्तुः) मूर्धानम् अधिरोहति, तत् रजः अपमाने अपि स्वस्थात् देहिनः वरम् (अस्ति)।

शब्दार्थ – यत् = जो, पादाहतम् = पैर से टकराकर, उत्थाय = उठी हुई, मूर्धानम् = मस्तक पर, अधिरोहति = चढ़ जाती है, तत् = वही, रजः = धूलि, अपमाने = तिरस्कार होने पर, अपि = भी, स्वस्थात् = शान्त, देहिनः = पुरुष से, वरम् = श्रेष्ठ है।

अनुवाद – मार्ग में चलने वाले व्यक्ति के पैरों से प्रताड़ित हुई धूलि उस व्यक्ति के सिर पर चढ़ जाती है। अपमानित होकर शान्त रहने वाले व्यक्ति की अपेक्षा वह धूलि ही श्रेष्ठ है जो अपमानित करने वाले व्यक्ति के सिर पर चढ़ जाती है अर्थात् अपमान का बदला स्वाभिमानी पुरुष को लेना चाहिए।

सन्धि –

यदुत्थाय – यत् + उत्थाय (जश्त्व सन्धि)

समास –

पादाहतम् – पादाभ्याम् आहतम् इति (तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.5 जन्म का वास्तविक फल

असम्पादयतः कञ्चिदर्थं जातिक्रियागुणैः।
यदृच्छाशब्दवत्पुंसः संज्ञायै जन्म केवलम्।। 47।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि माघ ने जन्म के वास्तविक फल को बताया है।

अन्वयः – जातिक्रियागुणैः कंचित् अर्थम् असम्पादयतः पुंसः जन्म यदृच्छाशब्दवत् संज्ञायै केवलम् (अस्ति)।

शब्दार्थ – जातिक्रियागुणैः = जाति, क्रिया और गुण से, कञ्चित् अर्थम् = किसी भी प्रयोजन को, असम्पादयतः = न करता हुआ, पुंसः = मनुष्य का, जन्म = जीवन, यदृच्छाशब्दवत् = व्यक्ति का बोध कराने वाला, संज्ञायै = संज्ञा के लिये, केवलम् = केवल।

अनुवाद – जो मनुष्य जाति, गुण, क्रिया से कुछ विशिष्ट कार्य को नहीं करता, उसके जन्म का फल केवल नाम धारण ही समझना चाहिए। अर्थात् जैसे किसी व्यक्ति को सम्बोधित करने के लिये उसका नामकरण किया जाता है, उस संज्ञा का कोई अन्य फल नहीं होता, उसी प्रकार उस व्यक्ति का जन्म व्यर्थ है जो अपने समाज के लिए कुछ नहीं करता।

सन्धि –

कञ्चिदर्थम् – कञ्चित् + अर्थम् (जश्त्व सन्धि)

समास –

जातिक्रियागुणैः – जातिश्च क्रिया च गुणश्च, जातिक्रियागुणः, तैः (द्वन्द्व समास)

यदृच्छाशब्दवत् – यादृशी इच्छा, यदृच्छा, तयाः कृतः शब्दः, यदृच्छाशब्दः, तेन तुल्यम् इति (तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.6 स्वाभिमानी व्यक्ति की श्रेष्ठता

तुङ्गत्वमितरा नाद्रौ नेदं सिन्धावगाधता।
अलङ्घनीयताहेतुरुभयं तन्मनस्विनि।। 48।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में माघ ने स्वाभिमानी व्यक्ति को श्रेष्ठ बताया है।

अन्वयः – अद्रौ तुङ्गत्वम् (अस्ति), इतरा न अस्ति। सिन्धौ अगाधता (अस्ति), इदं न (अस्ति)। मनस्विनि अलङ्घनीयताहेतुः तत् उभयम् (अस्ति)।

शब्दार्थ – अद्रौ = पर्वत में, तुङ्गत्वम् = उन्नति है, इतरा = गहराई, न अस्ति = नहीं है। सिन्धौ = समुद्र में, अगाधता = गहराई है, इदं न = यह नहीं है (ऊँचाई नहीं है)। मनस्विनि = स्वाभिमानी व्यक्ति में, अलङ्घनीयताहेतुः = अलंघनीयता का कारण, तत् उभयम् = वे दोनों हैं (ऊँचाई एवं गहराई दोनों हैं)।

अनुवाद – पर्वत में ऊँचाई होती है परन्तु गहराई नहीं। गहराई समुद्र में होती है लेकिन ऊँचाई नहीं होती, परन्तु स्वाभिमानी व्यक्ति में भावों की गम्भीरता और उच्चता दोनों पाई जाती है। अतः स्वाभिमानी व्यक्ति पर्वत और समुद्र दोनों से श्रेष्ठ होता है।

सन्धि –

नाद्रौ – न + अद्रौ (दीर्घ सन्धि)

नेदम् – न + इदम् (गुण सन्धि)

सिन्धावगाधता – सिन्धौ + अगाधता (अयादि सन्धि)

समास –

अलङ्घनीयताहेतुः – न लंघनीय इति अलंघनीय, तस्य भावः, अलंघनीयता, अलंघनीयताया हेतुः इति (तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.7 सरलता का दुष्परिणाम

तुल्येऽपराधे स्वर्भानुर्भानुमन्तं चिरेण यत्।
हिमांशुमाशु ग्रसते तन्म्रदिम्नः स्फुटं फलम्।। 49।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि माघ कहते हैं कि सदैव सरल भाव श्रेयस्कर नहीं होता।

अन्वयः – स्वर्भानुः अपराधे तुल्ये अपि भानुमन्तं चिरेण ग्रसते, हिमांशुम् आशु (ग्रसते), तत् म्रदिम्नः फलम् स्फुटम्।

शब्दार्थ – स्वर्भानुः = राहु, अपराधे = अपकार, तुल्ये = समान होने पर, अपि = भी, भानुमन्तम् = सूर्य को, चिरेण = बहुत काल के बाद, ग्रसते = ग्रसित करता है, हिमांशुम् = चन्द्रमा को, आशु = शीघ्र, तत् = ग्रसन करने का, म्रदिम्नः = कोमलता का, फलम् स्फुटम् = परिणाम स्पष्ट है।

अनुवाद– सूर्य और चन्द्रमा के अपराध समान होने पर भी राहु अत्यन्त तेज से सम्पन्न सूर्य को विलम्ब से व्यथित करता है। परन्तु शीतल किरण वाले चन्द्रमा को शीघ्र ही ग्रसित कर लेता है। इसलिए सदैव सरल भाव श्रेयस्कर नहीं होता। अतः शत्रु के प्रति कठोरता ही कल्याणकारी है।

सन्धि –

तन्म्रदिम्नः – तत् + म्रदिम्नः (अनुनासिक सन्धि)

स्वर्भानुर्भानुमन्तम् – स्वर्भानुः + भानुमन्तम् (विसर्ग सन्धि)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.8 बलहीन पुरुष का लक्षण

स्वयं प्रणमतेऽल्पेऽपि परवायावुपेयुषि।
निदर्शनमसाराणां लघुर्बहुतृणं नरः।। 50।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में माघ ने बलहीन पुरुष का लक्षण बताया है।

अन्वयः – असाराणां निदर्शनं बहुतृणं लघुः नरः अल्पे अपि परवायौ उपेयुषि स्वयं प्रणमते।

शब्दार्थ – असाराणाम् = दुर्बलों का, निदर्शनम् = उदाहरण है, बहुतृणम् = हल्का तिनका, लघुः = तुच्छ (बलहीन), नरः = मनुष्य, अल्पे = क्षुद्र (हल्के), अपि = भी, परवायौ = शत्रुरूपी वायु के, उपेयुषि = प्राप्त होने पर, स्वयम् = स्वयं, प्रणमते = झुक जाता है।

अनुवाद– बलहीन पदार्थों का उदाहरणभूत छोटा तिनका वायु के स्वल्प संचार से झुक जाता है। उसी प्रकार बलहीन पुरुष सामान्य से शत्रु के आने पर स्वयं ही उसके आगे नतमस्तक होकर आत्मसमर्पण कर देता है।

सन्धि –

परवायावुपेयुषि – परवायौ + उपेयुषि (अयादि सन्धि)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.9 तेजस्वी व्यक्ति की विशेषता

तेजस्विमध्ये तेजस्वी दवीयानपि गण्यते।
पञ्चमः पञ्चतपसस्तपनो जातवेदसाम्।। 51।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में माघ ने तेजस्वी व्यक्ति की विशेषता बताई है।

अन्वयः – दवीयान् अपि तेजस्वी तेजस्विमध्ये गण्यते। पञ्चतपसः तपनः जातवेदसाम् पञ्चमः भवति।

शब्दार्थ – दवीयान् अपि = अत्यन्त दूर भी, तेजस्वी = तेज सम्पन्न व्यक्ति, तेजस्विमध्ये = तेजस्वियों के बीच में, गण्यते = गिना जाता है, पञ्चतपसः = पञ्चाग्नि में तपस्या करने वाले तपस्वी के, तपनः = सूर्य, जातवेदसाम् = अग्नि के मध्य में, पञ्चमः = पांचवा अग्नि, भवति = है।

अनुवाद– तेजस्वी व्यक्ति अत्यन्त दूर होने पर भी तेजस्वियों के मध्य ही गिना जाता है। जैसे अत्यन्त दूर आकाश में विद्यमान सूर्य पंचाग्नि तापने वाले तपस्वियों के लिए पांचवां अग्नि माना जाता है क्योंकि अत्यन्त दूर होते हुये भी उसका तेज अत्यन्त प्रखर है।

सन्धि –

पञ्चतपसस्तपनो – पञ्चतपसः + तपनो (विसर्ग सन्धि)

समास –

पञ्चतपसः – पञ्च तपांसि यस्य सः, पञ्चतपः, तस्य पञ्चतपसः (बहुव्रीहि समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.10 कीर्ति के लिये शत्रुओं का मर्दन

अकृत्वा हेलया पादमुच्चैर्मूर्धसु विद्विषाम्।
कथङ्कारमनालम्बा कीर्तिर्द्यामधिरोहति।। 52।।

प्रसंग – महाकवि माघ ने प्रस्तुत श्लोक में समृद्धि के लिये शत्रुओं के मर्दन को ही श्रेष्ठ बताया है।

अन्वयः – उच्चैः विद्विषाम् मूर्धसु हेलया पादम् अकृत्वा अनालम्बा कीर्तिः कथंकारं द्याम् अधिरोहति।

शब्दार्थ – उच्चैः = उन्नत, विद्विषाम् = शत्रुओं के, मूर्धसु = मस्तक में, हेलया = तिरस्कार पूर्वक, पादम् = पैर को, अकृत्वा = न रखकर के, अनालम्बा = आश्रय रहित, कीर्तिः = यश, कथंकारम् = किसी प्रकार से, द्याम् = आकाश में, अधिरोहति = चढ़ती है।

अनुवाद– यदि समृद्धि के लिए ऊपर उठते हुये शत्रुओं के सिर पर अपमान के साथ पैर नहीं रखा जायेगा तब तक किसी भी आश्रय के बिना कीर्ति स्वर्ग पर्यन्त कैसे पहुंच सकती है ? अर्थात् कीर्ति को स्वर्ग तक पहुँचाने के लिये शत्रु का संहार करना आवश्यक है। जैसे भवन पर चढ़ने की इच्छा करने वाली स्त्री सीढ़ियों के द्वारा ही ऊपरी तल पर जाती है उसी प्रकार स्वर्ग तक जाने की इच्छा रखने वाली कीर्ति शत्रु के मस्तक रूपी सीढ़ियों में पैर रखकर ही ऊपर जाती है।

सन्धि –

पादमुच्चैर्मूर्धसु – पादमुच्चैः + मूर्धसु (विसर्ग सन्धि)

समास –

अनालम्ब – नास्ति आलम्ब, यस्य सः (बहुव्रीहि समास)

अकृत्वा – न कृत्वा इति अकृत्वा (नञ् तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.11 वीरता की श्रेष्ठता

अङ्काधिरोपितमृगश्चन्द्रमा मृगलांछनः।
केशरी निष्ठुरक्षिप्तमृगयूथो मृगाधिपः।। 53।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि माघ ने वीरता को सर्वश्रेष्ठ बताया है।

अन्वयः – अङ्काधिरोपितमृगः चन्द्रमाः मृगलांछनः (इति ख्यातः)। निष्ठुरक्षिप्तमृगयूथः केशरी मृगाधिपः (इति ख्यातः)।

शब्दार्थ – अङ्काधिरोपितमृगः = मृग को गोद में बैठाने वाला, चन्द्रमाः = चन्द्रमा, मृगलांछनः = मृग के चिह्न से युक्त (कहा जाता है)। निष्ठुरक्षिप्तमृगयूथः = निर्दयतापूर्वक मृगों के झुण्ड को मारने वाला, केशरी = सिंह, मृगाधिपः = मृगों का राजा (कहा जाता है)।

अनुवाद– दयापूर्वक अपने गोद में मृगों को बिठाने वाला चन्द्रमा मृगलांछन कहलाता है परन्तु निर्दय होकर मृगों को मारने वाला सिंह मृगराज कहा जाता है। अतः विद्वानों ने वीरता को ही सर्वश्रेष्ठ बताया है और उसी की प्रशंसा की है।

समास –

अङ्काधिरोपितमृगः – अंकम् अधिरोपितः मृगः येन सः (बहुव्रीहि समास)

निष्ठुरक्षिप्तमृगयूथो – निष्ठुरं यथा तथा क्षिप्तः मृगयूथः, येन सः (बहुव्रीहि समास)

मृगाधिपः – मृगाणाम् अधिपः इति (तत्पुरुष समास)

मृगलांछनः – मृगः लांछनम् यस्य सः (बहुव्रीहि समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.12 दण्ड-प्रयोग की श्रेष्ठता

चतुर्थोपायसाध्ये तु रिपौ सान्त्वमपक्रिया।
स्वेद्यमामज्वरं प्राज्ञः कोऽम्भसा परिषिंचति।। 54।।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्य में महाकवि माघ ने शत्रु के लिये दंड-प्रयोग को ही श्रेष्ठ माना है एवं शांति के व्यवहार को हानिकारक बताया है।

अन्वयः – चतुर्थोपायसाध्ये रिपौ तु सान्त्वम् अपक्रिया (भवति)। स्वेद्यम् आमज्वरम् (प्राप्य) कः प्राज्ञः अम्भसा परिषिंचति।

शब्दार्थ – चतुर्थोपायसाध्ये = दण्ड के द्वारा वश में होने वाले, रिपौ = शत्रु के विषय में, तु = तो, सान्त्वम् = शान्ति का व्यवहार, अपक्रिया = अपकार है (उचित नहीं है)। स्वेद्यम् = पसीने से उपचार योग्य, आमज्वरम् = आमज्वर, कः प्राज्ञः = कौन विद्वान्, अम्भसा = शीतल जल से, परिषिंचति = सींचेगा (अर्थात् उसकी पीड़ा को बढ़ायेगा)।

अनुवाद – चतुर्थ उपाय से वश में होने वाले अर्थात् दंड के योग्य शत्रु के लिए दंड प्रयोग ही श्रेष्ठ हैं। शान्ति का व्यवहार हानिकारक होता है। जैसे आम ज्वर के रोगी का ऐसा उपचार करना चाहिए जिससे उसको पसीना आ जाये। कौन ऐसा विद्वान् है ? जो ऐसे रोगी का शीतल जल से उपचार करेगा। अर्थात् कोई नहीं करेगा।

सन्धि –

चतुर्थोपाय – चतुर्थः + उपाय (गुण सन्धि)

कोऽम्भसा – कः + अम्भसा (विसर्ग सन्धि)

समास –

चतुर्थोपायसाध्ये – चतुर्थश्चासौ पायः इति चतुर्थोपायः, तेन साध्यः तस्मिन् (तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.13 शिशुपाल से सन्धि का निषेध

सामवादाः सकोपस्य तस्य प्रत्युत दीपकाः।
प्रतप्तस्येव सहसा सर्पिषस्तोयबिन्दवः।। 55।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में महाकवि माघ ने शिशुपाल से सन्धि की बात का निषेध किया है।

अन्वयः – सकोपस्य तस्य समवादाः प्रतप्तस्य सर्पिषः तोयबिन्दवः इव प्रत्युतः सहसा दीपका (भविष्यन्ति)।

शब्दार्थ – सकोपस्य = क्रोध के सहित, तस्य = उस शिशुपाल का, समवादाः = सन्धि वार्ता आदि का, प्रतप्तस्य = अत्यन्त उष्ण, सर्पिषः = घृत के, तोयबिन्दवः इव = जल के बिन्दु के समान, प्रत्युतः = विपरीत, सहसा = अकस्मात्, दीपका = उत्तेजक।

अनुवाद – कुपित शिशुपाल के साथ शान्ति और सन्धि की बात उसी तरह उत्तेजक होगी जिस प्रकार खौलते हुये घी में शीतल जल की छींटे उत्तेजक होती हैं। अर्थात् जैसे खौलते हुये घी में शीतल जल की छींटे उसकी ज्वाला को बढ़ाती हैं, उसी प्रकार अत्यन्त क्रोधित शिशुपाल से सन्धि की बातें उसके क्रोध को बढ़ायेगी।

सन्धि –

प्रतप्तस्येव – प्रतप्तस्य + इव (गुण सन्धि)

सर्पिषस्तोयबिन्दवः – सर्पिषः + तोयबिन्दवः (विसर्ग सन्धि)

समास –

सकोपस्य – कोपेन सहितः, सकोपः, तस्य (तत्पुरुष समास)

सामवादाः – साम्नः वादाः, इति सामवादाः (तत्पुरुष समास)

तोयबिन्दवः – तोयस्य बिन्दवः इति (तत्पुरुष समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

11.2.14 राज्य का अहित करने वाले मन्त्रियों का परित्याग

गुणानामायथातथ्यादर्थं विप्लावयन्ति ये।
अमात्यव्यंजना राज्ञां दूष्यास्ते शत्रुसंज्ञिताः।। 56।।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में माघ ने राज्य का अहित करने वाले मन्त्रियों को त्यागने को कहा है।

अन्वयः – गुणानाम् आयथातथ्यात् ये अर्थम् विप्लावयन्ति, अमात्यव्यंजनाः शत्रुसंज्ञिताः ते राज्ञां दूष्याः (भवन्ति)।

शब्दार्थ – गुणानाम् = सन्धि, विग्रह आदि गुणों का, आयथातथ्यात् = यथोचित, ये = जो, अर्थम् = कार्य को, विप्लावयन्ति = विनाश करते हैं, अमात्यव्यंजनाः = मन्त्री आदि पद को

धारण करने वाले, शत्रुसंज्ञिताः = शत्रु संज्ञा वाले, ते = वे, राज्ञां = राजा के, दूष्याः = त्याज्य होते हैं।

अनुवाद– जो राजनीति के अंग सन्धि, विग्रह आदि का समुचित प्रयोग न करके सम्पूर्ण राज्य के कार्य को नष्ट कर देते हैं ऐसे मन्त्री शत्रु के समान हैं। ऐसे मन्त्रियों को राजा को तुरन्त छोड़ देना चाहिए।

सन्धि –

दूष्यास्ते – दूष्याः + ते (विसर्ग सन्धि)

यथातथ्यादर्थम् – यथातथ्यात् + अर्थम् (जश्त्व सन्धि)

समास –

आयथातथ्यात् – तथात्वम् अनतिक्रम्य यथातथम्, यथातथस्य भावः इति यथातथ्यं न यथातथ्यम् इति आयथातथ्यम्, तस्मात् (अव्ययीभाव समास)

अमात्यव्यंजना – अमात्यं व्यंजनं (चिह्नं) येषां ते (बहुव्रीहि समास)

शत्रुसंज्ञिताः – शत्रुः संज्ञाः येषां ते शत्रुसंज्ञा संजाताः अस्य (बहुव्रीहि समास)

छन्द – पूर्ववत्।

लक्षणम् – पूर्ववत्।

बोध प्रश्न

1. किस प्रकार का व्यक्ति शीघ्र नष्ट हो जाता है ?
2. लज्जा स्त्रियों का आभूषण कब होती है ?
3. अपमानित होकर शान्त रहने वाले व्यक्ति की अपेक्षा कौन श्रेष्ठ है ?
4. किसके जन्म का फल केवल नाम धारण ही समझना चाहिये ?
5. मृगलांछन पद का समास विग्रह कीजिये।
6. चतुर्थोपाय पद का सन्धि विच्छेद कीजिये।

अभ्यास प्रश्न

1. शत्रु के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाना चाहिये ?
2. महाकवि माघ ने क्षमा के विषय में क्या कहा है ?
3. 'अन्यदा भूषणम्' इत्यादि पद्य से आप क्या समझते हैं ?
4. महाकवि माघ ने धूलि की प्रशंसा क्यों की है ?
5. मनस्वी पुरुष समुद्र और पर्वत की अपेक्षा क्यों श्रेष्ठ है ?
6. माघ ने शत्रु के प्रति उदारता न करने का निर्देश किस प्रकार दिया है?
7. तेजस्वी पुरुष के विषय में माघ के विचारों को लिखिये ?

11.3 सारांश

उपर्युक्त श्लोकों में आपने अध्ययन किया कि जो मनुष्य शत्रु को अपमानित करके उसके विषय में निश्चिन्त हो जाता है वह उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जिस प्रकार सूखी लकड़ी

में आग लगाकर वायु की अनुकूल दिशा में लेट जाने वाला व्यक्ति नष्ट हो जाता है अर्थात् शत्रु को भड़काकर उदासीन रहने वाला व्यक्ति शीघ्र नष्ट हो जाता है। महाकवि माघ ने बार-बार क्षमा करने को गुण नहीं माना। उन्होंने कहा है कि सहनशील व्यक्ति स्वल्प और एकबार के अपराध को यथेच्छ क्षमा कर सकता है। परन्तु बार-बार अपराध करने वाले शत्रु को कौन क्षमा करने में समर्थ है? अर्थात् कोई क्षमा नहीं कर सकता। जैसे रति के अतिरिक्त समय में ही लज्जा स्त्रियों का आभूषण होती है। रति के समय में धृष्टता ही रति को अलंकृत करती है। इसी प्रकार साधारण परिस्थिति में क्षमा पुरुष का गुण होता है। परन्तु अपमान के समय में वीरता ही उसका गुण होता है। दूसरे के अपमान के दुःख से दुःखित भी जो व्यक्ति निंदित जीवन बिताता है वह अपने माता को व्यर्थ ही गर्भ धारण से उत्पन्न प्रसव वेदना को देता है। अर्थात् उसका जन्म लेना व्यर्थ है। मार्ग में चलने वाले व्यक्ति के पैरों से प्रताड़ित हुई धूलि उस व्यक्ति के सिर पर चढ़ जाती है। अपमानित होकर शान्त रहने वाले व्यक्ति की अपेक्षा वह धूलि ही श्रेष्ठ है जो अपमानित करने वाले व्यक्ति के सिर पर चढ़ जाती है। अर्थात् अपमान का बदला स्वाभिमानी पुरुष को लेना चाहिए। जो मनुष्य जाति, गुण, क्रिया से कुछ विशिष्ट कार्य को नहीं करता, उसके जन्म का फल केवल नाम धारण ही समझना चाहिए। अर्थात् जैसे किसी व्यक्ति को सम्बोधित करने के लिये उसका नामकरण किया जाता है, उस संज्ञा का कोई अन्य फल नहीं होता, उसी प्रकार उस व्यक्ति का जन्म व्यर्थ है जो अपने समाज के लिए कुछ नहीं करता।

पर्वत में ऊँचाई होती है परन्तु गहराई नहीं। गहराई समुद्र में होती है लेकिन ऊँचाई नहीं होती, परन्तु स्वाभिमानी व्यक्ति में भावों की गम्भीरता और उच्चता दोनों पाई जाती है। अतः स्वाभिमानी व्यक्ति पर्वत और समुद्र दोनों से श्रेष्ठ होता है। सूर्य और चन्द्रमा के अपराध समान होने पर भी राहु अत्यन्त तेज से सम्पन्न सूर्य को विलम्ब से व्यथित करता है। परन्तु शीतल किरण वाले चन्द्रमा को शीघ्र ही ग्रसित कर लेता है। इसलिए सदैव सरल भाव श्रेयस्कर नहीं होता। अतः शत्रु के प्रति कठोरता ही कल्याणकारी है। बलहीन पदार्थों का उदाहरणभूत छोटा तिनका वायु के स्वल्प संचार से झुक जाता है। उसी प्रकार बलहीन पुरुष सामान्य से शत्रु के आने पर स्वयं ही उसके आगे नतमस्तक होकर आत्मसमर्पण कर देता है। तेजस्वी व्यक्ति अत्यन्त दूर होने पर भी तेजस्वियों के मध्य ही गिना जाता है। जैसे अत्यन्त दूर आकाश में विद्यमान सूर्य पंचाग्नि तापने वाले तपस्वियों के लिए पांचवां अग्नि माना जाता है क्योंकि अत्यन्त दूर होते हुये भी उसका तेज अत्यन्त प्रखर है।

यदि समृद्धि के लिए ऊपर उठते हुये शत्रुओं के सिर पर अपमान के साथ पैर नहीं रखा जायेगा तब तक किसी भी आश्रय के बिना कीर्ति स्वर्गपर्यन्त कैसे पहुंच सकती है ? अर्थात् कीर्ति को स्वर्ग तक पहुँचाने के लिये शत्रु का संहार करना आवश्यक है। जैसे भवन पर चढ़ने की इच्छा करने वाली स्त्री सीढ़ियों के द्वारा ही ऊपरी तल पर जाती है उसी प्रकार स्वर्ग तक जाने की इच्छा रखने वाली कीर्ति शत्रु के मस्तक रूपी सीढ़ियों में पैर रखकर ही ऊपर जाती है। दयापूर्वक अपने गोद में मृगों को बिठाने वाला चन्द्रमा मृगलांछन कहलाता है परन्तु निर्दय होकर मृगों को मारने वाला सिंह मृगराज कहा जाता है। अतः विद्वानों ने वीरता को ही सर्वश्रेष्ठ बताया है और उसी की प्रशंसा की है। चतुर्थ उपाय से वश में होने वाले अर्थात् दंड के योग्य शत्रु के लिए दंड प्रयोग ही श्रेष्ठ है। शान्ति का व्यवहार हानिकारक होता है। जैसे आम ज्वर के रोगी का ऐसा उपचार करना चाहिए जिससे उसको पसीना आ जाये। कौन ऐसा विद्वान् है ? जो ऐसे रोगी का शीतल जल से उपचार करेगा। अर्थात् कोई नहीं करेगा। कुपित शिशुपाल के साथ शान्ति और सन्धि की बात उसी तरह उत्तेजक होगी जिस प्रकार खौलते हुये घी में शीतल जल की छींटे उत्तेजक होती हैं। अर्थात् जैसे खौलते हुये घी में शीतल जल की छींटे उसकी ज्वाला को बढ़ाती हैं,

उसी प्रकार अत्यन्त क्रोधित शिशुपाल से सन्धि की बातें उसके क्रोध को बढ़ायेगी। जो राजनीति के अंग सन्धि, विग्रह आदि का समुचित प्रयोग न करके सम्पूर्ण राज्य के कार्य को नष्ट कर देते हैं ऐसे मन्त्री शत्रु के समान हैं। ऐसे मन्त्रियों को राजा को तुरन्त छोड़ देना चाहिए।

इस प्रकार इन श्लोकों में आपने राजनीति के कतिपय तत्त्वों का अध्ययन किया जो केवल राजाओं के लिये ही नहीं अपितु हमारे यथार्थ जीवन के लिये भी उपयोगी हैं।

11.4 शब्दावली

सामर्षे	=	क्रोधित
कक्षे	=	झाड़ी में
उदर्चिषम्	=	अग्नि को
अभिमारुतम्	=	वायु के सम्मुख
अनभ्यावृत्त्या	=	एक बार
विराध्यन्तम्	=	अपकार करने वाले को
वैयात्यम् इव	=	धृष्टता के समान
परिभवे	=	अपमान में
जननीक्लेशकारिणः	=	माता को दुःख देने वाला
रजः	=	धूलि
मूर्धानम्	=	मस्तक पर
स्वस्थात्	=	शान्त
यदृच्छाशब्दवत्	=	व्यक्ति का बोध कराने वाला
संज्ञायै	=	संज्ञा के लिये
अलङ्घनीयताहेतुः	=	अलंघनीयता का कारण
तुङ्गत्वम्	=	उन्नति है
अगाधता	=	गहराई
म्रदिम्नः	=	कोमलता का
भानुमन्तम्	=	सूर्य को
निदर्शनम्	=	उदाहरण है
परवायौ	=	शत्रुरूपी वायु के
जातवेदसाम्	=	अग्नि के मध्य में
द्याम्	=	आकाश में
अम्भसा	=	शीतल जल से
दीपका	=	उत्तेजक
आयथातथ्यात्	=	यथोचित

11.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. 'शिशुपालवधम्', डॉ. रामकुमार आचार्य, चौखम्बा पब्लिशर्स, गोकुल भवन, के–37/109, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी, 2000।
2. शिशुपालवधम्, श्री पण्डित हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, के 37/117, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी, 1984 ।
3. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, संस्कृत संस्थान, नया हैदराबाद, लखनऊ, 1997 ।
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009।
5. अमरकोश, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहर नगर, बंगलो रोड़, दिल्ली, 2011।
6. वृत्तरत्नाकरः, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2011।

11.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. शत्रु को भड़काकर उदासीन रहने वाला व्यक्ति शीघ्र नष्ट हो जाता है।
2. रति के अतिरिक्त समय में ही लज्जा स्त्रियों का आभूषण होती है।
3. अपमानित होकर शान्त रहने वाले व्यक्ति की अपेक्षा वह धूलि ही श्रेष्ठ है जो अपमानित करने वाले व्यक्ति के सिर पर चढ़ जाती है।
4. जो मनुष्य जाति, गुण, क्रिया से कुछ विशिष्ट कार्य को नहीं करता, उसके जन्म का फल केवल नाम धारण ही समझना चाहिये।
5. मृगः लांछनम् यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
6. चतुर्थः+उपाय (गुण सन्धि)

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY